उजड़ा घर

मूल लेखक—

स्वर्गीय श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर
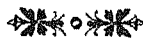
अनुवादक—

श्री कमलाप्रसाद राय शर्मा, बी. ए.

—:o:—

प्रकाशक—

प्रकाशक—
चौधरी एण्ड सन्स
बनारस सिटी

हमारा नवीन प्रकाशन

मंजिल	४)	पागल	
सविता	५)	कुंकुम	
लवंग	३॥)	इशारा	२॥)
निर्मोही	३॥)	जलन	२।)
आहुति	३॥)	मनोरमा	२।)
भँवरा	३।)	रोटी	२)
अंधकार	३।)	बासन्ती	२)
जवानी का नशा	३।)	झाँसी की रानी	३।)
नर और नारी	३)	वीर दुर्गादास राठौर	३॥)
बसेरा	२॥)	छत्रपति शिवाजी	१॥।)
अकेला	२॥)	बंधन	१।)
मन की पीर	१॥)	साहसी राजपूत	१॥)
होटल में खून	१॥)	हाहाकार	२।)
प्यासी तलवार	२)	प्यासी आँखें	०॥)
घर की लाज	३॥)	अब्राहम लिंकन	१)

मुद्रक—
गोपाल प्रेस,
बनारस।

दो शब्द

हिन्दी के पाठक 'गोरा', 'आँख की किरकिरी' आदि रवि बाबू की पुस्तकों का रसास्वादन कर चुके होंगे, परन्तु इस छोटीसी पुस्तक का अबतक हिन्दी अनुवाद कहीं से प्रकाशित नहीं हुआ था। इस पुस्तक की उपयोगिता क्या है और महाकवि ने इसे लिखकर समाज का क्या उपकार किया है; इसका निर्णय पाठक स्वयं करें। इस प्रसंग में लेखक की स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ पाठकों से केवल मेरा यही निवेदन है कि भूपति और चारुलता के चरित्र से शिक्षा लाभ करें। भूपति ने नवविवाहिता पत्नी के प्रति उसके यौवनोन्मेष के समय से ही उदासीनता दिखलाकर जो भयंकर गलती की थी, उसके कारण उसका दाम्पत्यजीवन नीरस दुःखद और दयनीय हो गया। दूसरी ओर चारुलता ने भी निरन्तर पर पुरुष का चिन्तन करके भयंकर अपराध किया, उसके फलस्वरूप आजीवन-भार वहन करना पड़ा। पति को सर्वस्व मानकर अन्य सम्बन्धियों के साथ यथोचित व्यवहार रखना ही हिन्दू कुलवधू के जीवन का आदर्श होना चाहिये, परन्तु चारुलता ने अपने कर्तव्य का पालन इस आदर्श के अनुकूल नहीं किया। युवक पाठक यदि इन चरित्रों की त्रुटियों से सावधान

होकर कर्तव्य-मार्ग से विचलित न हो और दाम्पत्य-जीवन के कर्तव्य का ठीक तरीके से पालन करते हुए जीवन निर्वाह करें, तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा। साथ ही इस पुस्तक में जहाँ कहीं कोई त्रुटि परिलक्षित हो तो उसके लिए भी मैं पाठकों से और स्वर्गीय महान् आत्मा से क्षमा-प्रार्थी हूँ।

२०—८—१९४२

कमलाप्रसाद राय शर्मा,
राजघाट, काशी।

१

भूपति को कोई काम करने की जरूरत न थी क्योंकि धन-सम्पत्ति की कोई कमी नहीं थी। फिर भी बेकार बैठे बैठे ऊब जाना स्वाभाविक है। चूंकि ग्रहों के प्रभाव से वे काम के आदमी होकर पैदा हुए थे, अतः संयोगवशात उन्हें एक अंग्रेजी समाचार पत्र निकालना पड़ा। इससे यह हुआ कि मन-ऊबने वाली समस्या हल हो गयी और इसके बाद समय की अधिकता के लिए उन्हें फिर विलाप नहीं करना पड़ा।

उजड़ा घर

लड़कपन से उन्हें अंग्रेजी में लिखने और भाषण करने का शौक था। किसी तरह की आवश्यकता न रहने पर भी वे अंग्रेजी अखबारों में लेख लिखते थे और वक्तव्य देने का कोई प्रसंग न रहने पर भी सभास्थल पर दो चार बातें जरूर ही बोलकर चैन लेते।

उनके समान धनवान व्यक्ति को अपने दल में शामिल करने के लिए राजनीतिक नेताओं की ओर से उनकी इतनी अधिक प्रशंसा होती रहती थी कि अपनी अंग्रेजी रचनाशक्ति के सम्बन्ध में उनकी धारणा यथेष्ट परिपुष्ट हो उठी थी।

अन्त में उनके साले, वकीलसाहब उमापति ने वकालत के पेशे से निराश होकर भगिनीपति से कहा—भूपति, तुम एक अंग्रेजी अखबार निकालो! तुम्हारे पास तो धन की कोई कमी नहीं है। तुम तो पूँजी लगाकर यह काम सहूलियत से कर सकोगे।

भूपति का उत्साह उमड़ पड़ा। दूसरों के अखबारों में वक्तव्य लेख आदि प्रकाशित करने में गौरव नहीं है, अपने ही समाचार पत्र में स्वाधीन लेखनी को पूरे वेग से दौड़ा सकूँगा, यह सोचकर साले को सहकारी बनाकर बहुत थोड़ी उम्र में ही भूपति सम्पादक की गद्दी पर बैठ गया।

कम उम्र में सम्पादकीय और राजनीतिक नशे का

जोर रहता है। विशेषतः भूपति को उन्मत्त बना देने की कोशिश करने वाले लोगों की कमी भी नहीं थी।

इस तरह अखबार में उलझ कर वह अपने-आप विभोर हो रहा था कि धीरे धीरे उसकी बालिका-वधू चारुलता ने धीरे धीरे यौवनावस्था में पदार्पण किया। परन्तु समाचार पत्र के सम्पादक जी को इस खबर का कुछ पता नहीं चला। 'भारत की सीमान्त नीति क्रमशः वृद्धि पाकर किस तरह संयम के बन्धन को तोड़ती जा रही है' यही उसके प्रधान लक्ष्य का विषय था। धनवान गृह की गृहिणी होने के कारण चारुलता को कोई काम करने की जरूरत नहीं पड़ती थी। फल परिणामहीन फूल की भाँति, परिपूर्ण अनावश्यकता के बीच परिस्फुटित हो उठना ही उसके चेष्टाशून्य आठो पहर का एकमात्र काम था। उसको किसी तरह की कमी नहीं थी।

ऐसी अवस्था में संसार में प्रायः देखा जाता है कि बहुएँ मौका पाकर पति को लेकर बहुत ऊधम मचाने लगती हैं, दाम्पत्य लीला की 'सीमान्त नीति, संसार की सारी सीमा को पार करके, समय से असमय और विहित से अविहित में जा पहुँचती है। चारुलता को वह सुअवसर नहीं मिला था। अखबार के आवरण को भेदकर पतिपर अधिकार प्राप्त करना उसके लिए असाध्य हो गया था।

सात

उजड़ा घर

युवती स्त्री के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए एक दिन जब किसी आत्मीय ने भूपति की भर्त्सना की तो भूपति ने एकबार होश में आकर कहा—तुमने ठीक ही कहा, चारू को एक संगिनी अवश्य चाहिए, उस बेचारी को कुछ भी काम नहीं; अकेली उदास होकर समय बिता रही है।

उसने अपने साले उमापति से कहा—तुम अपनी स्त्री को, यहाँ हमारे ही मकान पर क्यों नहीं लाते, एक उम्र की एक भी सहेली पास न रहने से चारू को खलता रहता है।

सम्पादकजी ने यही समझ लिया कि किसी सहेली का अभाव ही चारू के लिए चिन्ता का विषय है। अतः अपने साले की पत्नी मन्दाकिनी को घर लाकर पत्नी की चिन्ता दूर करने का निश्चय कर लिया।

जिस काल में पति-पत्नी प्रेमोन्मेष के प्रथम अरुणालोक में एक दूसरे के लिए, अपरूप महिमा से चिर-नवीन की भाँति प्रतिभात होते हैं, वही स्वर्ण प्रभामण्डित प्रभातकाल अचेतनावस्था में कब कैसे बीत गया, कोई भी न जान सका। नवीनता का स्वाद पाये बिना ही दोनों एक दूसरे के लिए पुराने परिचित की तरह मालूम होने लगे।

लिखने पढ़ने की ओर चारुलता का स्वाभाविक झुकाव था; इस कारण उसके दिन एकदम भारस्वरूप नहीं हुए। अपनी

ही चेष्टा से उसने पढ़ने के, तरह तरह के उपायों का बन्दोबस्त कर लिया था। भूपति का फुफेरा भाई अमल थर्डइयर में पढ़ता था, चारुलता उसी को बुलाकर पढ़ लिया करती थी और इस कार्य की पूर्ति के लिए अमल की अनेक मांगें उसे सहन करनी पड़ती थीं। उसके लिये होटल में भोजन करने का खर्च और अंग्रेजी साहित्य की पुस्तकें खरीदने का खर्च उसे जुटाना पड़ता। अमल बीच बीच में अपने मित्रों को निमन्त्रण देकर खिलाता और उस यज्ञ-सिद्धि का भार गुरुदक्षिणास्वरूप चारु-लता स्वयं ग्रहण करती। भूपति चारुलता के सम्मुख कोई भी मांग नहीं रखता, परन्तु, मामूली तौर से थोड़ा पढ़ाकर फुफेरे भाई अमल की माँगों का अन्त नहीं था। इस बात को लेकर चारुलता प्रायः बीच बीच में बनावटी क्रोध और विद्रोह प्रकट करती। किन्तु किसी आदमी के कुछ काम में आना और स्नेह का उपद्रव सहना उसके लिए बहुत जरूरी हो गया था।

एक दिन अमल ने कहा—भाभी, हमलोगों के कालेज के राजवंश का विद्यार्थी, राज—अन्तःपुर के खास हाथ के बुने हुए कार्पेट के जूते पहिन कर आता है यह मेरे लिए सह्य नहीं है—एक जोड़ा कार्पेट का जूता चाहिए, नहीं तो अब किसी तरह पद-मर्यादा की रक्षा न कर सकूँगा।

चारु—हाँ, ठीक है! तुम चाहते हो कि मैं बैठकर

तुम्हारा जूता सीसीकर मरूँ ? यह नहीं होगा, दाम देती हूँ, जाओ बाजार से खरीद लो।

अमल ने कहा—ऐसा नहीं हो सकता।

चारु जूता-सिलाई का काम नहीं जानती और अमल के सामने उस बात को अस्वीकार भी नहीं करना चाहती। अमल जो चाहता है उसकी पूर्ति होनी चाहिए। संसार में वही तो एकमात्र प्रार्थी है। उस एकमात्र प्रार्थी की प्रार्थना मंजूर किये बिना वह नहीं रह सकती। अमल जिस समय कालेज चला जाता, उस समय वह छिपकर बड़े यत्न से कार्पेट की सिलाई सीखने लगी। कुछ दिनों के बाद अमल स्वयं जब अपने जूते का प्रसंग एकदम भूल गया, ऐसे ही समय में एक दिन शाम को चारु ने उसे भोजन के लिए निमन्त्रण दिया।

गर्मी का दिन है। छत पर ही अमल के लिए भोजन का आसन रक्खा गया है। धूल उड़कर थाली में न गिरे, इस आशंका से पीतल के ढक्कन से थाली ढक दी गई है। कालेज की पोशाक खोलकर हाथ मुँह धोकर साफ सुथरा हो अमल उपस्थित हो गया।

अमल ने आसन पर बैठकर ढक्कन खोलकर देखा—थाली मे नया तैयार किया हुआ रेशम का एक जोड़ा जूता रक्खा हुआ है। चारुलता ठठाकर हँसने लगी।

जूता पाकर अमल की आशा और बढ़ चली। उसने कहा—अब गलाबन्ध, रेशम की रूमाल, फूलदार कसीदे से तैयार मिलना चाहिए। बैठकखाने में बैठने के लिए जो आराम-कुर्सी है उसपर लगे हुए तेल का दाग छिपाने के लिए, एक नक्काशी खींचा हुआ गिलाफ भी जरूर आ जाना चाहिए।

प्रतिवार ही चारुलता आपत्ति प्रकट करके झगड़ा करती और प्रत्येक बार बड़े यत्न और बहुत ही स्नेह के साथ शौकीन अमल का शौक पूरा कर देती। अमल कभी कभी पूछता, भाभी, कहाँ तक हुआ।

चारुलता झूठमूठ कहती, कुछ भी नहीं हुआ। कभी कहती, यह बात मुझे बिलकुल याद न थी। किन्तु अमल छोड़ देने वाला लड़का नहीं। प्रति दिन याद दिलाना और तकाजा करता। अमल के इन उपद्रवों को और भी उत्तेजित करने के लिए ही चारु उदासीनता दिखलाकर विरोध प्रकट करती और अचानक एक दिन उसकी प्रार्थना पूरी करके तमाशा देखने लगती।

धनवान गृहस्थ के घर में चारु को और किसी के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता, केवल अमल ही उसको काम कराये बिना नहीं छोड़ता। उसके इन्हीं सब छोटे छोटे शौक के कामों में ही उनकी स्त्री सुलभ आकांक्षायें पूर्ण होकर शान्ति का

अनुभव करती थी।

भूपति के अन्तःपुर में जो एक खण्ड जमीन पड़ी हुई थी, उसे यदि बगीचा कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। उस बगीचे की प्रधान धन-सम्पत्ति अमड़े के एक ही बिलायती पेड़ में निहित थी।

दोनों ने मिलकर कुछ दिनों से नक्शा खींचकर एक प्लान बनाया था और महा उत्साह से इस जमीन पर एक बगीचे की कल्पना भी निश्चित कर ली थी। अतः एक दिन इस भूखण्ड की उन्नति के लिए चारू और अमल की कमेटी बैठी।

अमल ने कहा, भाभी, हम लोगों के इस बगीचे में उस जमाने की राजकन्या की भाँति तुम्हें अपने ही हाथों से जल सींचना पड़ेगा।

चारू ने कहा—पश्चिम तरफ के कोने में एक झोपड़ी तैयार करनी होगी, एक हिरन का बच्चा भी रखा जायगा।

अमल ने कहा—एक छोटी सी झील भी बनाने की जरूरत है, उसमें बत्तक रखे जायँगे।

चारू ने इस प्रस्ताव से उत्साहित होकर कहा—और उसमें नीला कमल होगा, बहुत दिनों से नील कमल देखने को मेरी साध लगी हुई है।

अमलने कहा —उस झील के ऊपर एक छोटासा पुल बना देंगे और घाट पर एक सुन्दर छोटी डोंगी रहेगी।

चारू ने कहा—परन्तु घाट अवश्य ही सफेद संगमरमर पत्थर का बनाया जायगा।

अमल ने कागज पेन्सिल लेकर लकीर खींची और कम्पास पकड़कर बड़े ही आडम्बर से बगीचे का एक नक्शा खींच लिया।

दोनों ने मिलकर अपनी परिकल्पना में संशोधन परिवर्तन करते करते २८-२५ नये नक्शे तैयार कर लिये।

नक्शे के अनुसार कार्रवाई होने पर कुल खर्च कितना पड़ेगा, उसका एक एस्टिमेट बनाया जाने लगा। यह विचार किया गया था कि चारू अपने मासिक खर्च की रकम से थोड़ा थोड़ा अंश लगाकर धीरे धीरे बगीचा तैयार कर लेगी। घर पर कहाँ कौन काम कर रहा है, इसकी कोई भी खबर भूपति को नहीं रहती थी। बगीचा तैयार हो जाने पर हठात् एक दिन उसे वहाँ निमन्त्रण में बुलाकर आश्चर्य में डाल दिया जायगा। उस समय वह देखकर यह समझेगा कि अलादीन के प्रदीप की सहायता से जापान से एक समूचा बगीचा उठाकर लाया गया है।

किन्तु एस्टिमेट बहुत कम रखे जाने पर भी चारू उसका खर्च संभालने में असमर्थ थी। इस हालत में अमल फिर दूसरा

नक्शा तैयार करने लगा। उसने कहा—तो अब भाभी, उस झील का विचार छोड़ दिया जाय।

चारू ने कहा, नहीं नहीं, झील का विचार छोड़ा नहीं जा सकता, क्योंकि उसमें मेरा नील कमल रहेगा।

अमल ने कहा, तुम अपने हिरन के घर में खपड़े का छप्पर न लगाओगी तो क्या हर्ज होगा। उसमें साधारण सादा छप्पर लगाने से भी तो काम चल जायगा।

चारू ने अत्यन्त क्रोधित होकर कहा—तब तो उस घर की मुझे कोई जरूरत नहीं—उसे रहने दो!

मारिशस से लौंग, कर्नाटक से चन्दन और सीलोन से दालचीनी का पौधा मँगाने का प्रस्ताव रखा गया था। अमल ने उन सबके बदले में मानिकतल्ला से साधारण देशी और बिलायती पेड़ों का नाम लिया। यह सुनते ही चारू ने मुँह फुलाकर कहा तब तो मुझे अब बगीचे की जरूरत नहीं है।

एस्टिमेट घटाने का यह तरीका चारू को अरुचिकर मालूम पड़ा। एस्टिमेट के साथ साथ अपने विचारों को छोटा करना चारू के लिये एक असाध्य विषय है और अमल के मुँह से जो कुछ भी क्यों न निकले, उसे अक्षरशः स्वीकार कर लेना भी उसके लिये कठिन है।

अमल ने कहा—तब तो भाभी, यही अच्छा होगा कि

तुम भैया के सामने बगीचे का प्रस्ताव रखो। वे अवश्य ही रुपया देंगे।

चारू ने कहा—नहीं, उनसे कहने से क्या मजा रह जायगा? हम दोनों मिलकर बगीचा तैयार कर लेंगे। वे तो हुक्म चलाकर ईडेन गार्डेन तैयार करा सकते हैं—ऐसा होने पर हमारे प्लान का क्या होगा?

अमड़ा वृक्ष की छाया में बैठकर चारू और अमल असाध्य संकल्प की कल्पना कर रहे थे। चारू की भाभी ने दो तल्ले से पुकार कर कहा, इतनी देर तक तुमलोग बगीचे में क्या कर रहे हो?

मुखाकृति पर मन्द मुसकान बिखेरती हुई चारू ने कहा—हमलोग पके अमड़े की खोज में हैं।

पके अमड़े की स्वाद को यादकर मन्दाकिनी के मुँह में पानी उतर आया। उसने ललचाते हुए स्वर में कहा—यदि मिल जाय तो मेरे लिये भी लेते आना।

चारू हँसने लगी, अमल भी हँस पड़ा। उनकी सभी इच्छाओं का प्रधान सुख और गौरव यही था कि वे सब अपने-आप ही आबद्ध थे। मन्दा में और गुण क्यों न हों परन्तु उसमें सोचने की योग्यता नहीं थी, वह इन सब प्रस्तावों का रसास्वादन कैसे कर सकती है, वह तो इन दो सभ्यों की कमेटी

से एकदम बहिष्कृत है।

असाध्य बगीचे के एस्टीमेट में भी कोई कमी नहीं हुई, कल्पना भी कभी हार मानने को तैयार नहीं हुई। इसलिए अमड़ा पेड़ के नीचे की कमेटी लगातार कुछ दिनों तक इसी तरह चलती रही। बगीचे में जिस स्थान पर झील बनेगी, जहाँ पत्थर की वेदी बनेगी, उन स्थानों पर अमल ने लकीरें खींच डालीं।

उनके इच्छित बगीचे में अमड़े के चारों तरफ किस तरह वेदी बनायी जायगी, अमल एक छोटी सी कुदाली लेकर उसकी सरहद पर लकीर खींच रहा था—ऐसे ही समय में चारू ने पेड़ की छाया में बैठकर कहा, अमल, यदि तुम लिख सकते तो बड़ी अच्छी बात होती।

अमल ने कहा, क्यों अच्छी बात होती ?

चारू—उस हालत में अपने बगीचे का वर्णन तुमसे एक कहानी के रूप में लिखवा लेती। यह झील, यह हिरन का घर, यह अमड़े का पेड़ आदि सबका जिक्र उसमें रहता। हम दोनों के सिवा और कोई समझ नहीं पाता, बड़े ही मजे की बात होती। अमल ! तुम एक बार लिखने को कोशिश करके देखो न; अवश्य ही तुम लिख सकोगे।

अमल ने कहा—अच्छा यदि लिख सकूं तो मुझे क्या

दोगी ? चारू ने पूछा, तुम क्या लेना चाहते हो ?

अमल ने उत्साहित होकर कहा—अपनी मशहरी में मैं लता पुष्पादि का नक्शा बना दूँगा, उसपर तुम शुरू से आखिर तक रेशम से कसीदा काढ़ देना।

चारू ने कहा—तुम्हारे सभी काम विचित्रता से भरे होते हैं, मशहरी में भी क्या कसीदा बनाया जाता है ?

मशहरी जैसी जरूरी चीज को एक शोभाहीन जेलखाने की भाँति रखने के विरुद्ध कमल ने अनेक बातें कहीं। उसने कहा कि दुनियाँ में पन्द्रह आने आदमियों में सौन्दर्य ज्ञान नहीं रहता और कुरूपता उन्हें कुछ भी कष्टकर नहीं मालूम होती, यही उसका प्रमाण है।

चारू ने उसी समय उस बात को मान लिया। हम दोनों की यह एकान्त कमेटी इस पन्द्रह आने के अन्तर्गत नहीं है, यह समझकर वह मन ही मन बड़ी खुशी हुई।

उसने अन्त में कहा, अच्छी बात है, मैं मशहरी तैयार कर दूँगी, तुम लिखना आरम्भ कर दो।

अमल ने रहस्य का भाव प्रकट करते हुए कहा—क्या तुम समझती हो कि मैं लिख न सकूँगा ?

चारू ने अत्यन्त उत्तेजित होकर कहा—तब तो तुमने जरूर ही कुछ लिख रखा है, मुझे दिखाओ !

अमल—आज रहने दो भाभी !

चारु—नहीं, आज दिखलाना पड़ेगा, मेरे सिर की सौगन्ध, जाओ लेकर आओ !

चारु को अपनी लिखी चीज़ सुनाने की व्यग्रता बहुत दिनों से जोर मार रही थी, परन्तु एक व्यवधान जो बीच में आ खड़ा हुआ था, वह यह था कि, कहीं उसका लेख उसे नीरस और अरुचिकर न लगे। और इस संकोच को बलात् मन से निकाल फेंकने का साहस भी उसे नहीं हो रहा था। अकस्मात् आज उसके पीछे पड़ जाने के कारण, उसका वह संकोच और व्यवधान छिन्न-भिन्न हो गया। वह लेख ले आया। कुछ खाँसकर उसे सुनाना शुरू किया। चारु पेड़ का सहारा ले, घास पर पैर फैलाकर सुनने लगी।

निबन्ध का विषय था, "मेरा खाता !" अमल ने लिखा था—हे मेरे सफेद खाता, मेरी कल्पना ने अब तक तुमको स्पर्श नहीं किया था। सूतिका-गृह में भाग्य-पुरुष के प्रवेश के पहले, बच्चे के ललाट की भाँति तुम निर्मल, रहस्यमय हो। जिस दिन तुम्हारे अन्तिम पृष्ठ की अन्तिम पंक्ति में उपसंहार लिख दूँगा, वह दिन आज कहाँ है ! तुम्हारे ये सफेद बच्चे से पन्ने चिरकाल के लिए स्याही से चिन्हित रूप में, समाप्ति की बात स्वप्न में भी नहीं सोच रहे हैं !—इत्यादि—बहुत-सी

बातें लिखी थीं।

चारू पेड़ की छाया में बैठकर स्तब्ध होकर सुनने लगी। पढ़ना खतम होने के बाद, थोड़ी देर तक चुप रहकर उसने कहा—तुम फिर नहीं लिख सकते।

उस दिन उस पेड़ के नीचे अमल ने साहित्य का मादक रस पहले पहल पान किया,—साकी थी नवीना, रसना भी थी नवीन और अपरान्ह का प्रकाश लम्बी छाया के आगमन से रहस्यपूर्ण हो चला था।

चारू ने कहा—अमल कुछ अमड़ा तोड़कर ले चलना चाहिए, नहीं तो मन्दा को क्या हिसाब दिया जायगा?

मूढ़ मन्दा को, अपनी पढ़ाई लिखाई और आलोचना की बातें बतलाने की प्रवृत्ति ही नहीं होती, इसलिए अमड़ा तोड़कर ले जाना होगा।

२

बगीचे का इरादा उनके अन्य बहुत से कल्पित कामों की भाँति, सीमाहीन कल्पना-क्षेत्र के बीच कब गायब हो गया, यह अमल और चारू किसी को भी मालूम न हो सका।

अब अमल का लिखना ही उनकी आलोचना और परामर्श का प्रधान विषय हो उठा। अमल आकर कहता—भाभी एक बहुत ही सुन्दर भाव दिमाग में आ गया है।

चारु उत्साहित हो जाती, कहती—चलो अपने दक्षिण तरफ के बरामदे में—यहाँ तो इसी समय मन्दा पान लगाने के लिये आ पहुँचेगी।

चारु काश्मीरी बरामदे में एक पुरानी बेंत की चटाई पर बैठ जाती और अमल रेलिंग के नीचे के ऊँचे हिस्से पर बैठकर पैर फैला देता।

अमल के लिखने के विषय प्रायः ही निश्चित नहीं रहते—

यह साफ तौर से बतलाना कठिन है। गड़बड़ी के साथ वह जो कुछ कहता उसे अच्छी तरह समझना किसी की भी शक्ति में नहीं है। अमल स्वयं ही बीच बीच में बोल उठता—भाभी, तुमको अच्छी तरह न समझा सका!

चारु कहती—नहीं, मैं बहुत कुछ समझ गयी, तुम इसे लिख डालो, देर मत करो।

कुछ तो मन ही मन समझकर, कुछ न समझकर, बहुत कुछ कल्पना में लाकर, बहुत अंशों में अमल के व्यक्त करने के जोश से उत्तेजित होकर मन में एक तरह का जो आका-

वह खींच लेती, उसी में वह सुख पाती और आग्रह से अधीर हो उठती।

उसी दिन तीसरे पहर को, चारु पूछ बैठती, कितना लिख चुके ?

अमल कहता, इतने समय के अन्दर ही क्या लिखा जा सकता है ?

दूसरे दिन सवेरे कुछ झगड़ालू स्वर में चारु पूछती—क्यों, तुमने अभी इसे लिख नहीं डाला ?

अमल जवाब देता—बैठो, और थोड़ा सोच लूँ। चारु रंज होकर बोलती—तब जाओ !

तीसरे पहर को जब वह क्रोध और बढ़ जाता और चारु बोलना बन्द करने का रुख दिखलाती, तब अमल पाकेट से रूमाल निकालने के बहाने लिखे हुए कागज का एक हिस्सा निकाल लेता।

क्षणभर में चारु का मौनावलम्बन टूट जाता, और वह बोल उठती—तुमने तो लिख रखा है, मुझे धोखा देते हो। दिखाओ।

अमल कहता—अभी लिखना खतम नहीं हुआ है और कुछ लिखकर सुनाऊँगा !

चारु—नहीं, अभी सुनाना पड़ेगा ?

अमल इसी समय सुनाने के लिये तैयार है, किन्तु चारू को कुछ समय तक तंग किये बिना वह नहीं सुनाता। इसके बाद अमल कागज हाथ में लेकर बैठ जाता और शुरू में पन्ने को कुछ ठीक कर लेता, पेन्सिल लेकर दो एक स्थान में कुछ संशोधन करने लगता, तब तक चारू की आँखें जल के भार से झुके हुए बादल की भाँति पुलकित-कौतूहल से उस कागज की ओर झुकी रहतीं।

जब अमल दो चार पैराग्राफ लिख डालता तब वह जितना भी क्यों न हो, चारू को पढ़कर सुना देना पड़ता और बाकी हिस्सा आलोचना और कल्पना के बीच मथित होता रहता।

इतने दिनों तक दोनों आकाश-कुसुम चुनने में लिप्त थे अब काव्यकुसुम का कर्षण आरम्भ होने से, दोनों और सभी बातें भूल गये।

एक दिन तीसरे पहर को जब अमल कॉलेज से लौटा तो उसकी जेब कुछ अधिक भरी हुई-सी मालूम हुई। अमल ने जब मकान के अन्दर प्रवेश किया तो चारू ने अन्तःपुर की खिड़की से उसकी जेब की पूर्णता की तरफ गौर से देख लिया था।

और दिन बराबर कालेज से लौटते ही अमल मकान

के अन्दर जाने में देर नहीं करता था, परन्तु आज वह अपनी भरी हुई जेब के साथ बाहर वाले बैठकखाने में चला गया। शीघ्र भीतर आने का उसने नाम नहीं लिया।

चारू ने अन्तःपुर के सरहद पर आकर अनेक बार तालियाँ बजाईं, पर किसी ने भी नहीं सुना। चारू कुछ रंज होकर अपने बरामदे में मन्मथ दत्त की एक पुस्तक पढ़ने की कोशिश करने लगी।

मन्मथ दत्त नया लेखक है। उसके लिखने का तरीका बहुत अंशों में अमल से मिलता जुलता है, इस कारण अमल कभी उसकी प्रशंसा नहीं करता था। कभी कभी उसकी लिखी चीज को व्यंग के साथ पढ़कर परिहास करता और चारू अमल के हाथ से उस पुस्तक को छीनकर लापरवाही के साथ कुछ दूरी पर फेंक देती।

आज जब अमल के पैर की आहट सुनाई पड़ी तब उसने मन्मथदत्त की पुस्तक को अपनी आँखों के सामने रखकर एकाग्र-भाव से पढ़ना शुरू किया।

अमल बरामदे में आ पहुँचा, चारू ने उस तरफ ध्यान भी नहीं दिया मानों कुछ देखा ही नहीं। अमल ने पूछा, भाभी, क्या पढ़ रही हो?

चारू को निरुत्तर देख अमल ने चौकी के पीछे जाकर

पुस्तक को देख लिया। कहा—मन्मथदत्त बेवकूफ है।

चारू ने कहा, आः! तङ्ग मत करो, मुझे पढ़ने दो। पीठ के पास खड़ा होकर अमल व्यंग्य भरे स्वर में पढ़ने लगा—मैं तृण हूँ, छोटा-सा तृण हूँ, भाई रक्ताम्बर राजवेश-धारी अशोक, मैं तृण मात्र हूँ! मेरा फूल नहीं है, मेरी छाया नहीं है, अपने मस्तक को मैं आकाश में नहीं उठा सकता। बसन्त की कोयल मुझे आश्रय बनाकर, कुहू स्वर में संसार को उन्मत्त नहीं बनाती—तो भी भाई अशोक, तुम अपनी उस पुष्पांकुरित ऊँची शाखा से मेरी उपेक्षा मत करो—तुम्हारे पैर के नीचे मैं पड़ा हुआ तृण हूँ, इतने पर भी मुझे तुच्छ मत बनाओ।

इतना ही अंश उस पुस्तक से पढ़कर अमल लेखक को बेवकूफ बनाते हुए कहने लगा—मैं केले का झौंप हूँ, कच्चे केले का झौंप, भाई कौंहड़ा, भाई घरों के मचानों पर विहार करने वाले कौंहड़ा, मैं एकदम ही कच्चे केले का झौंप हूँ।

चारू कौतूहल के आवेश में क्रोध दबा न सकी—हँसकर उठी और पुस्तक फेंककर कहा, अपनी लिखी चीज के अलावा तुम्हें और कुछ नहीं जँचता?

अमल ने कहा—तुम्हारी बड़ी उदारता है, तृण पाने पर भी उसे निगल जाना चाहती हो।

चारू—अच्छा महाशय, हँसी करने की जरूरत नहीं—जेब में क्या है बाहर निकालो !

अमल—क्या है, अन्दाजा लगा लो !

बड़ी देर तक चारू को चिढ़ाकर अमल ने जेब से 'सरोरुह' नामक प्रसिद्ध मासिक पत्रिका निकाल कर रख दी।

चारू देखा कि उस पत्रिका में अमल का वही 'खाता' नामक निबन्ध प्रकाशित हुआ है।

चारू ने देखकर चुप हो गई। अमल ने सोचा था कि उसकी भाभी बहुत खुश होगी। किन्तु खुशी का विशेष कुछ लक्षण न देखकर उसने कहा—सारोरुह पत्रिका में मामूली लेखकों के लेख नहीं प्रकाशित होते।

अमल ने यह बात कुछ बढ़ा चढ़ाकर कह दी कि जिस किसी तरह का लेख पाने पर भी सम्पादक उसे नहीं छोड़ते। किन्तु अमल ने चारू को समझाकर कहा—इसके सम्पादक बहुत ही बड़े दिमाग के आदमी हैं, सौ लेखों में एक लेख ही चुनते हैं।

सुनकर चारू खुश होने की कोशिश करने लगी पर खुश न हो सकी। किस चीज से उसे मन में चोट लगी, उसे समझकर देखने की उसने चेष्टा की, परन्तु कोई उचित कारण प्रकट नहीं हुआ।

अमल की लिखी चीज अमल और चारू दोनों की सम्पत्ति है। अमल लेखक है, चारू है पाठक। उसको गुप्त रखना ही उसका प्रधान रस है। उस लेख को सभी पढ़ेंगे और सभी उसकी प्रशंसा करेंगे, इससे तो प्रसन्न ही होना चाहिये, पर अपनी इस उपेक्षा की बात वह स्वयं अच्छी तरह समझ न सकी।

किन्तु लेखक की आकांक्षा, एक ही पाठक से नहीं मिटती। अमल अपनी रचनायें छपाने लगा। प्रशंसा भी होने लगी। बीच बीच में भक्तों की चिट्ठियाँ भी आने लगीं। अमल उन सबको अपनी भाभी को दिखलाता। चारू उससे प्रसन्न भी हुई दुःखी भी। अमल को लिखने में प्रवृत्त कराने के लिए अब तो एक मात्र उसी के उत्साह और उत्तेजना की जरूरत नहीं रही। बीच बीच में अमल के पास रमणियों के गुमनाम पत्र भी आने लगे। उस हालत में चारू कुछ हँसी मजाक कर बैठती, पर उसे सुख नहीं मिलता। हठात् उनकी कमिटी के बन्द दरवाजे को खोलकर, पाठक-मण्डली उन दोनों के बीच आकर खड़ी हो गयी।

भूपति ने एक दिन मौका पाकर अवकाश के समय कहा—चारू, हम लोगों का अमल जो इतना अच्छा लिख सकता है, यह बात मुझे मालूम नहीं थी।

भूपति की प्रशंसा से चारु खुश हुई। अमल भूपति का आश्रित है, किन्तु अन्य आश्रितों और उनमें फर्क है, इस बात को उसके पति समझते हैं। इससे वह मानो गर्व अनुभव करती। उसका भाव यही था कि अमल को मैं किसलिए इतना स्नेह आदर करती हूँ—इतने दिनों के बाद तुम समझ सके—मैंने बहुत दिनों पहले ही अमल की मर्यादा समझ ली थी, अमल किसी की अवज्ञा का पात्र नहीं है।

चारु ने पूछा, तुमने उसकी लिखी कोई रचना पढ़ी है?

भूपति ने कहा—हाँ—नहीं अच्छी तरह नहीं पढ़ी है। समय नहीं मिला। किन्तु हमलोगों का निशिकान्त पढ़कर प्रशंसा कर रहा था। वह लेखों का मर्म भली भाँति समझता है।

भूपति के मन में अमल के प्रति एक तरह की श्रद्धा का भाव जाग उठे, यही चारु का आन्तरिक इच्छा है।

३

उमापद अखबार में लेख देने वालों को पाँच तरह के पुरस्कार देने की बात भूपति को समझा रहा था, किन्तु पुरस्कार देकर किस तरह नुकसान सम्भालकर लाभ हो सकेगा यह बात

भूपति की समझ में बिलकुल ही नहीं आ रही थी।

चारू एक बार कमरे में प्रवेश कर उमापद को देखकर लौट गयी। फिर थोड़ी देर में इधर उधर तबीयत बहलाकर कमरे में गयी तो फिर उसने देखा कि दोनों मिलकर हिसाब के सिलसिले में बहस कर रहे हैं।

चारू की अधीरता देखकर उमापद किसी बहाने कमरे से बाहर चला गया। भूपति हिसाब लेकर सोचने लगा।

चारू ने कमरे में प्रवेश करके पूछा, अब तक भी शायद तुम्हारा काम खतम नहीं हुआ! दिन रात उसी एक समाचारपत्र को लेकर तुम्हारा समय कैसे कटता है, यही मैं सोचती रहती हूँ।

भूपति हिसाब को एक तरफ रखकर कुछ मुस्कराया। मन ही मन सोचा, सच है, चारू की तरफ ध्यान देने का मुझे समय ही नहीं मिलता, यह बहुत ही अन्याय हो रहा है। इस बेचारी के लिए समय बिताने का कुछ भी साधन नहीं है।

भूपति ने स्नेहभरी आवाज में कहा—आज तुम्हारी पढ़ाई नहीं हुई? मास्टर साहब शायद भाग गये हैं? तुम्हारे पाठशाले के सभी नियम उलटे हैं—छात्रा पोथी-पत्रा लेकर तैयार है और मास्टर लापता! आजकल अमल तुमको पहले की तरह नियम से पढ़ाता है, ऐसा तो नहीं मालूम हो रहा है!

चारू ने कहा—अपने पढ़ाने में लगाकर अमल का समय नष्ट करना क्या उचित है ? मानो तुमने अमल को एक मामूली प्राइवेट ट्यूटर ही समझ लिया है ?

भूपति ने चारू को पास खींचकर कहा—इसे क्या मामूली प्राइवेट ट्यूटरी कहते हैं ? तुम्हारी तरह भाभी पाकर यदि मुझे भी पढ़ाने को मौका मिलता उस हालत में—

चारू—इस् इस् ! तुम और कुछ न बोलो ! पढ़ा लिखा पति पाकर भी, मेरे लिये पति के कॉलेज में अपने स्वार्थ की बातों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है !

भूपति ने कुछ घायल होकर कहा, अच्छा कल से मैं अवश्य ही तुम्हें पढ़ाना शुरू करूँगा। अपनी पुस्तकें जरा लाओ तो ! देखूँ तुम क्या पढ़ती हो ?

चारू ने कहा—बहुत हुआ, तुमको मुझे और पढ़ाने की जरूरत नहीं। इस समय जो कर रहे हो वही ठीक है। पढ़ाने लगोगे तो क्या उस हालत में अपने अखबार का हिसाब किताब कुछ रख सकोगे ? तब और किसी तरफ अपने मन को नहीं लगा सकोगे।

भूपति ने कहा—ठीक कहती हो, इस समय तुम मेरे मन को जिधर घुमाना चाहोगी उधर घूम जायगा !

चारू—अच्छा, तो अमल के इस लेख को एक बार पढ़कर

देखो कि अच्छा हुआ है ?

सुनकर भूपति ने कुछ संकोच के साथ पत्रिका को अपने हाथ में ले लिया। खोलकर देखा, लेख का शीर्षक है "आषाढ़ का चाँद"। गत दो सप्ताह से भूपति भारत सरकार के बजट की समालोचना के बारे में बड़े बड़े आँकड़े तैयार कर रहा था, वे सभी आँकड़े बहुपदी कीट की भाँति उसके मस्तिष्क के बीच चक्कर लगा रहे थे, ऐसे समय में अचानक बँगला भाषा में लिखा हुआ "आषाढ़ का चाँद" शीर्षक लेख आद्यन्त पढ़ने के लिये उसका मन तैयार नहीं था। निबन्ध बहुत छोटा भी नहीं था।

लेख इस तरह आरम्भ हुआ। "आज क्यों आषाढ़ का चाँद सारी रात बादल के बीच से छिपता हुआ घूम रहा है, मानों स्वर्गलोक से कोई चीज चुराकर लाया है, मानों कलंक छिपाने का स्थान नहीं है। फागुन के महीने में जब आकाश के किसी कोने में मुट्ठीभर बादल भी नहीं था तब तो संसार की आँखों के सामने उसने निर्लज्ज की भाँति उन्मुक्त आकाश में अपने को प्रकट किया—और आज उसका वह विहँसना शिशु के स्वप्न की भाँति, प्रिया की स्मृति की भाँति—"

भूपति ने सिर खुजलाकर कहा—बहुत लिखा है।

किन्तु क्या यह सब कवित्व-भाव मैं समझ सकता हूँ ?

चारू ने संकुचित होकर भूपति के हाथ से कागज छीन कर कहा—तुम तब क्या समझते हो ?

भूपति ने कहा—मैं संसार का मनुष्य हूँ, मैं मनुष्य को समझता हूँ।

चारू ने कहा—मनुष्य की बातें मानों साहित्य में लिखी ही नहीं रहती।

भूपति—गलत लिखी जाती है। इसके अलावा जब मनुष्य सशरीर मौजूद है, तब बनावटी बातों के बीच उसे खोजते रहने की जरूरत ?

कहकर चारुलता का चिबुक पकड़कर कहा—मैं तुमको जितना समझता हूँ—उसकी पुष्टि के लिए क्या मेघनाद बध, कवि कंकण के चण्डी को आद्यन्त पढ़ने की जरूरत है ?

काव्य समझ नहीं सकता यह कहकर भूपति गर्व अनुभव करता था, किन्तु फिर भी अमल की लिखी हुई चीज अच्छी तरह न पढ़ने पर भी उसके प्रति भूपति के मन में एक प्रकार की श्रद्धा थी। भूपति सोचता, बतलाने समझाने की कोई भी बात नहीं है। तथापि इतनी बातें अनर्गल बनाकर कहना, यह काम तो सिर पटककर मर जाने पर भी मुझसे नहीं हो सकता। अमल के मस्तिष्क में इतनी शक्ति

है, यह कौन जानता था।

भूपति अपनी रसज्ञता को अस्वीकार करता था। किन्तु साहित्य के प्रति उसके मन में कृपणता नहीं थी। कोई दरिद्र लेखक यदि उसे पकड़ता तो पुस्तक छपाने का खर्च भूपति उसे देता, केवल विशेषरूप से कह देता कि देखना, मुझे यह समर्पित न की जाय। बँगला भाषा के छोटे बड़े सभी साप्ताहिक और मासिक पत्र, प्रसिद्ध अप्रसिद्ध, पाठ्य अपाठ्य सभी पुस्तकें वह खरीद लेता। कहता, एक तो पढ़ता ही नहीं, फिर यदि न खरीदूँ, तो पाप भी करूँगा, प्रायश्चित्त भी न होगा। पढ़ता नहीं था, इसलिए बुरी पुस्तकों के प्रति उसके मन में लेशमात्र भी द्वेष का भाव नहीं था। उसकी लाइब्रेरी, बँगला पुस्तकों से भरी हुई थी।

अमल भूपति को अँग्रेजी प्रूफ देखने के काम में सहायता करता था। किसी एक कापी के दुर्बोध्य लिखावट को दिखलाने के लिए उसने कागजों का एक ढेर लेकर कमरे में प्रवेश किया।

भूपति ने हँसकर कहा, अमल, तुम 'आषाढ़ का चाँद' और 'भादों मास के पके ताड़पत्र' पर जितना जी चाहे लिखो, मैं उसपर कोई आपत्ति नहीं करता—मैं किसी की स्वाधीनता में टाँग नहीं अड़ाना चाहता—किन्तु मेरी स्वाधी-

नता पर हस्तक्षेप क्यों? वह तो उन सबको मुझे बिना दिखाये चैन न लेंगी, तुम्हारी भाभी का यह कैसा अत्याचार?

अमल ने हँसकर कहा—भाभी, मेरे लिखे हुए विषयों को लेकर तुम जो इस तरह भैया पर जुर्म करने का उपाय ढूँढ़ निकालोगी, ऐसा मालूम होता तो मैं लिखता ही नहीं।

साहित्य-रस से विमुख भूपति के पास लाकर, अपनी अत्यन्त कष्ट से लिखी हुई चीजों को अपमानित करने से अमल मन ही मन चारू पर रुष्ट हुआ। और तुरन्त ही इस बात को समझ कर चारू के मन में कष्ट हुआ। बात को दूसरी तरफ घुमा देने की नियत से उसने भूपति से कहा—तुम अपने भाई का ब्याह कर दो, उस हालत में लिखाई का उपद्रव सहना न पड़ेगा।

भूपति ने कहा आजकल के लड़के हमलोगों की तरह बेवकूफ नहीं हैं। अच्छा हो, अपने देवर को तुम विवाह करने के लिए सहमत कर लो।

चारू के चले जाने पर भूपति ने अमल से कहा, अमल मुझे इस अखबार के झमेले में फँसा रहना पड़ता है, चारू बेचारी बहुत ही अकेली पड़ गयी है, कोई काम काज नहीं है। बीच बीच में मेरे इस लिखने के कमरे में झाँककर लौट जाती है। क्या करूँ, बतलाओ। अमल, तुम उसे कुछ लिखने

पढ़ने में व्यस्त रख सको तो अच्छा हो। कभी कभी यदि अंग्रेजी काव्य से अनुवाद करके उसे सुना दिया करो तो भलाई भी होगी और अच्छा भी लगेगा। चारू साहित्य में विशेष रुचि रखती है।

अमल ने कहा, हाँ, रुचि तो है। यदि भाभी कुछ और पढ़ लिख लेंगी तो मुझे विश्वास है कि वे स्वयं बहुत अच्छा लिख सकेंगी?

भूपति ने हँसकर कहा, इतनी आशा नहीं करता, किन्तु चारू बङ्गला लेखों की अच्छाई या बुराई मुझसे अधिक समझ सकती है।

अमल—उसमें बहुत अच्छी कल्पना-शक्ति है, स्त्रियों में ऐसा नहीं दिखाई पड़ता।

भूपति—पुरुषों में भी बहुत कम दिखाई पड़ता है। इसका गवाह मैं हूँ, अच्छा, यदि तुम अपनी भाभी को योग्य बना सको तो मैं तुम्हें पुरस्कार दूँगा।

अमल—क्या दोगे, सुन लूँ।

भूपति—तुम्हारी भाभी की-सी एक जोड़ी खोज ला दूँगा।

अमल—फिर उसे लेकर पढ़ाने लिखाने में लग जाना पड़ेगा। चिरकाल तक क्या योग्य बनाते रहने में ही समय बिताऊँगा!

दोनों भाई आजकल के नयी दुनिया के लड़के हैं, कोई भी बात उनके मुँह में रुकावट नहीं डालती।

४

समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करके अब अमल ने अपना मस्तक बहुत ऊँचा उठा लिया है। पहले वह स्कूल के छात्र की भाँति रहता था, अब वह मानों समाज के प्रतिष्ठित लोगों की तरह हो गया। कभी कभी सभा में साहित्यिक निबन्ध पढ़ता है—सम्पादक और सम्पादक के प्रतिनिधि उसके घर आकर बैठे रहते हैं, उसे निमन्त्रित करके खिलाते पिलाते हैं, तरह तरह की सभाओं के सदस्य और सभापति बनने के लिए उसके पास अनुरोध करने के लिये लोग आया करते हैं। भूपति के घर में दास दासियों और आत्मीय स्वजनों की आँखों में उसके सम्मानित पद का स्थान बहुत ऊँचाई पर चढ़ गया है।

मन्दाकिनी ने इतने दिनों तक उसे कोई खास व्यक्ति नहीं समझा था। अमल और चारु के हास्यपूर्ण वार्तालाप और आलोचना को वह बचपन का खेल समझकर उपेक्षा करती और पान लगाने तथा घर के कामों में व्यस्त रहा

करती थी। अपने को वह उनकी अपेक्षा श्रेष्ठ और संसार के लिए जरूरी जानती थी।

अमल बहुत अधिक पान खाया करता था। मन्दा पर लगाने या खर्च करने का भार था, इस कारण वह पान की बरबादी से रुष्ट होती थी। अमल और चारू षड़यन्त्र करके मंदा के पान का भण्डार लूट लेने में आनन्द पाते थे और यह काम उनके लिए एक तरह का आमोद था। किन्तु इन दोनों शौकीन चोरों का यह परिहास मन्दा को आमोदजनक नहीं मालूम होता था।

असल बात यह है कि एक आश्रित दूसरे आश्रित को अच्छी निगाहों से नहीं देखता। अमल के लिए मन्दा को जो कुछ अतिरिक्त काम करना पड़ता था, उससे भी वह कुछ अपना अपमान मालूम करती थी। चारू अमल के पक्ष में थी, इसलिए मुँह खोलकर वह कुछ कह नहीं सकती थी, किन्तु अमल की अवहेलना करने की कोशिश बराबर ही जारी रहती थी। मौका पाते ही दास दासियों को सुनाकर चुपके से अमल के नाम पर खोंच लगाने में वह बाज नहीं आती थी। वे लोग भी उसमें शामिल हो जाते थे।

किन्तु जब अमल का उत्थान आरम्भ हुआ, तब मन्दा को मालूम हुआ कि अब वह पहले का अमल नहीं है। अब उसको

संकुचित नम्रता एक दम घट गई है, दूसरे की अवज्ञा करने का अधिकार मानो अब उसी को प्राप्त है। संसार में प्रतिष्ठा प्राप्त करके जो पुरुष संयम-रहित होकर बेधड़क अपना प्रचार कर सकता है, जिस मनुष्य ने एक निश्चित अधिकार पा लिया है, वह समर्थन पुरुष सहज ही में नारी की दृष्टि आकर्षित कर सकता है। मन्दा ने जब देखा कि अमल चारो तरफ से ही श्रद्धा पाने लगा है, तब उसने भी अमल के ऊँचे मस्तक की तरफ मुँह उठाकर देखा।

अब इस हालत में पान चुराने की जरूरत नहीं रह गयी। अमल की प्रसिद्धि बढ़ जाने से चारू का इस तरह एक नुकसान हुआ; उसके षड्यन्त्र का कौतुक-बन्धन छिन्न हो गया। अब तो अमल के पास पान स्वयं हाजिर हो जाता है, कोई अभाव नहीं रहता।

इसके अतिरिक्त वे दोनों दल-संगठन करके, मन्दाकिनी को तरह तरह की युक्तियों से दूर रखकर जिस प्रमोद का उपभोग करते थे, वह भी नष्ट हो जाने की घड़ी आ गयी। मन्दा को दूर रखना कठिन हो चला। अमल के मन में यह धारणा दृढ़ हो जाना कि चारू ही उसकी एकमात्र मित्र है, यह बात मन्दा को अच्छी नहीं लगती थी। पहले की अवहेलना को सूद और असल के साथ चुका देने को वह तैयार

हो गयी। इसलिये अमल और चारू ज्योंही परस्पर एक दूसरे के सामने आ जाते त्योंही मन्दा किसी न किसी बहाने बीच में पहुँच कर 'ग्रहण' लगा देती। हठात् उसमें यह परिवर्तन देखकर उसकी अनुपस्थिति में उसका परिहास कर सकने का मौका मिलना भी चारू के लिए कठिन हो गया।

मन्दा का यह बिना बुलाये ही प्रवेश होना चारू को जितना कष्टकर मालूम होने लगा उतना अमल को नहीं, यह बतलाने की कोई जरूरत नहीं है। विमुख रमणी का मन धीरे धीरे उसकी तरफ लौटा आ रहा है, इससे वह मन ही मन एक प्रकार के कौतूहल का अनुभव करने लगा था।

किन्तु जब चारू दूर से ही मन्दा को देखकर तीव्र मृदु स्वर में कहती, "वह चली आ रही है"—तब अमल भी कहता, "हाँ, देखो न! इसने तंग कर मारा है"—दुनियाँ के अन्य सभी संसर्गों के प्रति असहिष्णुता प्रगट करने की उसकी एक आदत-सी पड़ गयी थी। अमल उसे अचानक क्या कहकर छोड़ देता। अन्त में मन्दाकिनी एकदम पास आ जाती, तब अमल मानो बलपूर्वक सज्जनता दिखलाकर कहता—मन्दा भाभी! आज क्या तुमने अपने पान के डब्बे में कुछ गड़बड़ी का लक्षण देखा है?

मन्दा—जब माँगते ही तुरन्त पा जाते हो, तब भाई

चोरी करने की क्या जरूरत है ?

अमल—माँग कर पाने से, उसमें ज्यादा सुख है।

मन्दा—तुम लोग क्या पढ़ रहे थे, पढ़ो न भाई ! रुक क्यों गये ? मैं पढ़ना सुनना बहुत ही पसन्द करती हूँ।

इसके पहले पाठानुराग के लिए, यश-अर्जन करने की चेष्टा मन्दा में कभी नहीं देखी गई थी, किन्तु "कालोहि बलवत्तर: ।" चारू की यह बिल्कुल ही इच्छा नहीं है कि अमल नीरस मन्दा के पास कुछ भी पढ़े, और अमल चाहता है कि मन्दा भी उसके लेख आदि सुन लिया करे।

चारू ने मन्दा को लक्ष कर कहा—अमल ने कमलकान्त के दफ्तर की समालोचना लिखी है, वह क्या तुम्हारी......

मन्दा—मानती हूँ कि मैं मूर्ख हूँ, फिर भी सुनने से क्या एकदम ही न समझ सकूँगी।

तब किसी दूसरे दिन की बात अमल को याद पड़ी। चारू और मन्दा ताश खेल रही थीं, ऐसे ही समय अपना लेख हाथ में लेकर अमल खेल की बैठक में पहुँच गया। चारू को सुनाने के लिये वह व्याकुल हो रहा था। खेल खतम नहीं हो रहा है, देखकर वह चिढ़ रहा था। अन्त में बोला, भाभी तुमलोग खेलो, तब तक मैं अखिल बाबू को लेख सुना आऊँ।

चारु ने अमल की चादर खींचकर कहा, आह! बैठ जाओ न, कहाँ जाते हो?—कहकर शीघ्र हार कर खेल खतम कर दिया।

मन्दा ने कहा, अब तुम लोगों की पढ़ाई शायद शुरू होगी? तब मैं जा रही हूँ।

चारु ने भद्रता दिखलाकर कहा, क्यों तुम भी सुन लो न बहिन!

मन्दा—नहीं बहिन, मैं तुम लोगों की उन बातों को कुछ भी नहीं समझ सकती—मुझे केवल नींद आने लगती है, कहकर असमय में ही खेल बन्द हो जाने से बहुत रुष्ट होकर चली गयी।

वही मन्दा आज कमलाकान्त की समलोचना सुनने को तैयार है। अमल ने कहा, अच्छी बात है, तुम सुनोगी, यह तो मेरा अहोभाग्य है!—कहकर पन्ना उलटकर फिर उसने शुरू से पढ़ने का रुख दिखलाया। लेख के आरम्भ में उसने बहुत कुछ रस सञ्चारित किया था, उस अंश को छोड़कर पढ़ने की उसकी इच्छा नहीं हुई।

चारु ने शीघ्रता से कहा, तुमने तो कहा था कि जाह्नवी लाइब्रेरी से कुछ पुराने मासिक-पत्र ला दोगे।

अमल—यह काम तो आज नहीं हो सकता।

चारू—आज ही के लिए तो कहा था, शायद तुम भूल गये ?

अमल—भूलूँगा क्यों ? तुमने तो कहा था......

चारू—बहुत अच्छा मत लाओ। तुम लोग पढ़ो, मैं जाती हूँ, और परेश को लाइब्रेरी में भेज दूँ, कहकर चारू उठ खड़ी हुई।

अमल को अनर्थ की आशंका मालूम हुई। मन्दा मन ही मन समझ गयी और क्षणभर में चारू के प्रति अपने मन को खट्टा कर लिया। चारू के चले जाने पर, अमल उठ जाऊँ या नहीं सोचकर इधर उधर कर रहा था, कि मन्दा ने कुछ मुसकुराकर कहा—जाओ भाई, मान भंग करो जाकर—चारू ने क्रोध किया है। मुझे अपना लेख सुनाओगे तो बड़े फेर में पड़ जाओगे।

इसके बाद उठकर चला जाना अमल के लिए कठिन हो चला। अमल ने चारू के प्रति कुछ विमुख-सा होकर कहा, क्यों ! फेर किस बात का ? और तुरन्त लिखित विषय फैलाकर पढ़ने का रुख प्रकट किया।

मन्दा ने दोनों हाथों से उसके लेख को ढाँककर कहा—जरूरत नहीं है भाई, मत पढ़ो कहती हुई मानो आँसू रोककर वहाँ से अन्यत्र चली गई !

५

चारू निमन्त्रण में गयी थी। मन्दा अपने कमरे में बैठकर बाल की रस्सी तैयार कर रही थी। 'भाभी' कहकर अमल ने कमरे में प्रवेश किया। मन्दा को यह भलीभाँति मालूम था कि चारू के निमन्त्रण में जाने का समाचार अमल को अविदित नहीं है। उसने हँसकर कहा, अहा अमल बाबू! किसकी खोज में आकर किसको देख लिया? ऐसा ही तुम्हारा भाग्य है। अमल ने कहा, हाँ, बायीं तरफ का पुआल जिस तरह का है, दाहिनी ओर का भी ठीक उसी तरह का है; गधे के लिए तो दोनों ही समान आदर की चीजें हैं। यह कहकर वहीं बैठ गया।

अमल—मन्दा भाभी, तुम अपने गाँव की कोई प्रचलित कहानी सुनाओ तो।

लेख का विषय संग्रह करने के लिए, अमल सबकी सभी बातें बड़े चाव से सुना करता था। इसलिए वह अब पहले की तरह उसकी एकदम उपेक्षा नहीं करता। मन्दा का मनस्तत्व—मन्दा का इतिहास अब उसके लिए उत्सुकता का विषय हो गया है। उसका जन्मस्थान कहाँ है, उसका गाँव कैसा है, बचपन में समय कैसे कटता था, कब विवाह हुआ आदि सभी बातें

वह खोद खोदकर पूछने लगा। मन्दा के छोटे से जीवन चरित्र के सम्बध में किसी ने आज तक इतनी उत्सुकता नहीं दिखलाई थी। मन्दा आनन्द के साथ अपनी सभी बातें बतलाने लगी। बीच बीच में कहती—अरे मैं क्या कह गई, इसका कुछ भी ठिकाना नहीं।

अमल ने उत्साह बढ़ाकर कहा—नहीं, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, कहे जाओ। मन्दा के पिता का एक काना गुमाश्ता था, वह अपने दूसरे विवाह की स्त्री से झगड़ कर कभी कभी अभिमान में पड़कर अनशन कर देता। अन्त में भूख की ज्वाला से मन्दा के घर किसी तरह चुप-चाप भोजन करने के लिए आता था, और दैवयोग से एक दिन कैसे उसकी स्त्री ने उसे पकड़ लिया था—यह कहानी जब चल रही थी और ध्यानपूर्वक सुनते सुनते जब अमल सकौतुक हँस रहा था—ऐसे ही समय में चारू ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया।

कहानी-सूत्र भिन्न हो गया। उसके आगमन से हठात् एक जमी हुई सभा भंग हो गई, चारू ने यह साफ तौर से समझ लिया।

अमल ने पूछा—भाभी! इतनी जल्दी ही लौटकर आ गयीं, क्या बात है?

चारू ने कहा—यही तो देखती हूँ, बहुत जल्द ही लौट आयी हूँ—कहकर चली जाने के लिये तैयार हो गयी।

अमल ने कहा—तुमने अच्छा ही किया, तुमने मेरी रक्षा की। मैं सोच रहा था, न मालूम कब लौटोगी। मन्मथदत्त की 'सन्ध्या की चिड़िया' नामक नयी पुस्तक तुम्हें पढ़कर सुनाने के लिये लाया हूँ!

चारू—अभी रहने दो, मुझे और काम करना है!

अमल—काम है तो मुझे हुकम दो, मै कर देता हूँ।

चारू को मालूम था कि अमल आज पुस्तक खरीदकर उसे सुनाने के लिये आयेगा। वह अमल के मन में द्वेष पैदा करने के लिये मन्मथ की लेखनशैली की प्रशंसा करेगी और अमल उस पुस्तक को बिगाड़ कर पढ़ता हुआ उपहास करता रहेगा। इन सब बातों को सोचकर ही वह अधैर्यवश निमन्त्रण देने वालों के सभी अनुनय विनय ठुकराकर तबीयत ठीक न रहने का बहाना करके चली आयी है। अब वह बार बार सोच रही है, वहाँ अच्छी तरह थी, चला आना अनुचित हुआ।

मन्दा भी तो कम बेहाया नहीं है। अकेली अमल के साथ एक कमरे में बैठकर दाँत निकाल कर हँस रही है। लोग देखकर क्या सोचेंगे? परन्तु इस बात को लेकर मन्दा

की भर्त्सना करना चारू के लिये बहुत ही कठिन है। क्योंकि यदि मन्दा उसी का उदाहरण देकर जवाब दे दे तो! किन्तु वह कुछ और है और यह कुछ और। वह अमल को रचना में उत्साहित करती है, अमल के साथ साहित्यालोचना करती है, किन्तु मन्दा का तो वह उद्देश्य बिल्कुल ही नहीं है। मन्दा अवश्य ही सरल युवक को मुग्ध करने के लिए जाल फैला रही है। इस भयंकर विपत्ति से अमल की रक्षा करना उसका ही कर्त्तव्य है। अमल को इस मायाविनी की नीयत कैसे बतला दी जाय, या समझा दी जाय? बतलाने पर उसके प्रलोभन की निवृत्ति न होकर यदि उलटा हो जाय?

बेचारा भैया! वे अपने मालिक का अखबार लेकर दिन रात मिहनत करके मर रहे हैं और मन्दाकिनी कोने में बैठकर अमल को फुसलाने का आयोजन कर रही है। भैया तो एकदम निश्चिन्त हैं। मन्दा पर उनका अगाध विश्वास है। इन सब बातों को अपनी ही आँखों से देखकर चारू कैसे निश्चिन्त रह सकेगी। यह तो भारी अन्याय होगा।

किन्तु पहले अमल बहुत अच्छा था। जिस दिन से लिखना शुरू करके उसने नाम कमाया है, उसी दिन से सभी

अनर्थ दिखाई पड़ने लगे हैं। चारू ही तो उसकी लेखन-कला की जड़ है। अशु क्षण में ही उसने अमल को साहित्य-रचना में उत्साह दिया था। अब क्या अमल पर उसका पहले की तरह जोर चलेगा? अब अमल ने पाँच आदमियों के अन्दर का स्वाद पा लिया है, अतः एक को छोड़ देने से भी उसका कुछ होता जाता नहीं।

चारू ने साफ तौर से समझ लिया कि उसके हाथ से छूटकर अन्य के हाथ में पड़ने से अमल पर भारी विपत्ति आ पड़ी है। चारू को अमल अब ठीक अपनी बराबरी में नहीं समझता—चारू की बुद्धि-सीमा को वह पार कर गया है। वह अब लेखक है और चारू है पाठक! इसका प्रतिकार करना ही होगा।

अहा! सरल अमल, मायाविनी मन्दा, बेचारा भैया।

६

उस दिन, आषाढ़ के नये नये बादलों से आकाश आच्छन्न था। कमरे में अन्धकार फैल जाने के कारण चारू अपनी खुली खिड़की के पास एकदम झुककर कुछ लिख रही थी।

अमल कब बगैर पैर की आहट के ही उसके पीछे आकर खड़ा हो गया, यह वह बिल्कुल ही न जान सकी। बादल के स्निग्ध प्रकाश में चारू लिखने लगी और अमल पढ़ने लगा। पास ही अमल के दो चार छपे हुए लेख खुले हुए हैं। चारू के लिए वे ही, सब रचनाओं में एक मात्र आदर्श हैं।

"तुम कहा करती थी कि लिखना नहीं जानती!" हठात् अमल की आवाज सुनकर चारू एकदम आश्चर्य में पड़ गयी और उठकर शीघ्रता से खाता छिपा दिया—कहा यह तो तुम्हारा भारी अन्याय है।

अमल—क्या अन्याय किया है?

चारू—छिपकर क्यों देख रहे थे?

अमल—प्रकट देख लेने पर कुछ बोलना पड़ता।

चारू अपना लिखा हुआ फाड़कर फेंकने के लिए तैयार हो गयी। अमल ने झटपट उसके हाथ से खाता छीन लिया। चारू ने कहा, यदि तुम पढ़ लोगे तो जन्मभर के लिए तुमसे बिगाड़ हो जायगी।

अमल—यदि पढ़ने के लिये मना करोगी तो तुम्हारे साथ जीवनभर के लिए बिगाड़......

चारू—मेरे सिर की शपथ है तुम्हें, पढ़ो मत।

अन्त में चारू को ही हार मान लेनी पड़ी, क्योंकि अमल को अपना लेख दिखाने के लिए उसका मन छटपटा रहा था, फिर भी दिखलाते समय उसे इतनी लज्जा मालूम होगी, यह उसने कभी नहीं सोचा था। अमल जब बहुत ही अनुनय करके पढ़ने लगा तब लज्जा से चारू के हाथ पैर बर्फ की भाँति ठंडे पड़ गये। मैं पान लेकर आ रही हूँ, कहकर जल्दी जल्दी पास के कमरे में पान लगाने के बहाने चली गयी।

अमल ने पढ़ना समाप्त करके चारू से जाकर कहा, बहुत अच्छा लिखा है।

चारू ने पान में कत्था देना भूलकर कहा, जाओ अब हँसी मजाक करने की जरूरत नहीं! दो, मेरा खाता दे दो!

अमल ने कहा—खाता, अभी नहीं दूँगा। लेख नकल करके समाचार-पत्र में छपने के लिए भेजूँगा।

चारू—हाँ, समाचार-पत्र में भेज दोगे क्या? ऐसा नहीं होगा।

चारू भारी गड़बड़ी करने लगी। अमल ने भी किसी तरह नहीं छोड़ा। जब उसने बराबर शपथ खाकर कहा कि यह समाचार-पत्र में देने योग्य हुआ है, तब चारू ने मानों अत्यन्त हताश होकर कहा, तुम्हारे साथ होड़ करने को

मुझमें शक्ति नहीं है। जो जिद् पकड़ लोगे उसे छोड़ोगे ही नहीं। अमल ने कहा, भैया को एक बार दिखलाना होगा। यह सुनकर चारू पान लगाना छोड़कर आसन से बहुत तेजी से उठी और खाता छीन लेने की कोशिश करते हुए कहा,—नहीं, उनको न सुना सकोगे। उनसे यदि मेरे लेख की बात बतलाओगे तो मैं फिर एक अक्षर भी न लिखूँगी।

अमल—भाभी, तुम भारी गलती पर हो। भैया मुँह से जो कुछ भी क्यों न कहें, तुम्हारा लेख देखकर बहुत ही खुश होंगे।

चारू—होने दो मुझे खुशी की जरूरत नहीं है।

चारू प्रतिज्ञा करके बैठी थी कि वह लिखेगी और अमल को आश्चर्य में डाल देगी। मन्दा और उसमें बहुत अधिक फर्क है, इस बात को सिद्ध किये बिना चैन न लेगी। इधर कई दिन काफी लिखकर उसने फाड़ दिया है। जो लिखने लगती है, वह बहुत ही अधिक अमल की शैली से मिलता जुलता-सा हो जाता है। दोनों की तुलना करने पर वह देखती है कि एक-एक अंश अमल के लेखों से प्रायः उद्धृत हो चले हैं। वे ही अच्छे हैं, बाकी कच्चे हैं। अमल देखकर अवश्य मन ही मन हँसेगा, यह सोचकर चारू ने उन लेखों को टुकड़े टुकड़े फाड़कर पोखरे में फेंक दिया ताकि उनका कोई अंश भी दैवात् अमल के हाथ

में न पड़ जाय।

पहले उसने लिखा था—"सावन का बादल"। सोचा था भावाश्रु जल से अभिषिक्त बहुत ही अच्छा नया लेख लिख चुकी है। हठात् होश होने पर उसने देखा कि यह चीज अमल के 'आषाढ़ का चाँद' शीर्षक लेख का इधर उधर का अंशमात्र है! अमल ने लिखा है—भाई चाँद, तुम बादलों के बीच चोर की तरह छिपकर क्यों घूम रहे हो—चारू ने लिखा था, सखी कादम्बिनी, हठात् कहाँ से आकर अपने नीलाञ्चल के नीचे चाँद को चुराकर भागी जा रही हो, इत्यादि।

किसी तरह भी अमल के प्रभाव से बचने में असमर्थ होकर अन्त में चारू ने रचना का विषय बदल दिया। चाँद, बादल, आदि छोड़कर उसने 'कालीतला' नामक एक लेख लिखा। उसके गाँव में छाया से अँधेरी पड़ी हुई पोखरी के किनारे कालीजी का मन्दिर था—उस मन्दिर को लेकर अपने बचपन की कल्पना, उसके बारे में अपना विचित्र संस्मरण, उस जाग्रत देवी के महात्म्य के सम्बन्ध में गाँव में चिर-प्रचलित पुरानी कहानी, इन्हीं सब बातों को लेकर उसने एक लेख लिखा। उसका आरम्भिक भाग अमल के लेख के ढाँचे में काव्याडम्बरपूर्ण हुआ था, किन्तु कुछ आगे

बढ़ने के साथ ही, उसका लेख सहज में ही सरल देहाती भाषा में, शैली और प्रवाह से परिपूर्ण हो उठा है।

इस लेख को छीनकर अमल ने पढ़ा। उससे मालूम हुआ कि आरम्भ का हिस्सा बहुत सरल हुआ है, किन्तु अन्त तक कवित्व की रक्षा नहीं हो सकी है। जो हो, प्रथम रचना की दृष्टि से लेखिका का उद्यम प्रशंसनीय है।

चारू ने कहा—आओ! हमलोग एक मासिक पत्रिका निकालने का श्रीगणेश करें। क्या विचार है तुम्हारा?

अमल—बहुत से रौप्यचक्र न होने पर वह गज कैसे चलेगा?

चारू—हमलोगों के इस पत्र में कोई खर्च नहीं है। यंत्रालय में मुद्रित करने की जगह, हाथ से लिखा जायगा। उसमें तुम्हारे और मेरे लेखों के सिवा और किसी के लेख न रहेंगे, किसी दूसरे को पढ़ने न दिया जायगा। केवल दो प्रतियाँ ही निकलेंगी—एक तुम्हारे लिए और दूसरी मेरे लिए।

कुछ दिनों पहले यह प्रस्ताव आया होता तो अमल खुशी से उमड़ उठता, अब उसका गुप्त रखनेवाला उत्साह चला गया है। अब दस पाठकों के सामने लेख न जाने से उसे सन्तोष नहीं मिलता था। फिर भी इस समय पहले का ठाठ रखने के लिए उसने उत्साह दिखलाया। कहा, यह तो

बहुत ही अच्छी बात होगी।

चारू ने कहा—किन्तु प्रतिज्ञा करनी पड़ेगी कि अपनी पत्रिका के अलावा किसी दूसरी में तुम अपने लेख प्रकाशित न करा सकोगे।

अमल—ऐसा करने से तो सम्पादक लोग मार ही डालेंगे।

चारू—और मेरे हाथ में मानों मारने का कोई अस्त्र ही नहीं है।

बात पक्की हो गयी। दो सम्पादक और दो पाठकों की बैठक बन गयी। अमल ने कहा, पत्रिका का नाम रखा जाय 'चारु पाठ' चारू ने कहा, नहीं, उसका नाम रहेगा 'अमल'।

इस नवीन योजना में चारु जैसे डूब-सी गयी। वह इधर के कई दिनों के दुःख को भूल गयी। उनकी मासिक-पत्रिका में मन्दा के प्रवेश का कोई मार्ग नहीं है, और बाहर के लोगों के लिये भी प्रवेश का दरवाजा बन्द है।

७

भूपति ने एक दिन आकर कहा—चारु! तुम एक लेखिका बन जाओगी. पहले तो ऐसी कोई भी बात नहीं मालूम हुई थी– इसका कुछ भी आभास नहीं मिला था।

चारु ने लाल होकर कहा—मैं लेखिका! किसने तुमसे यह बात कही। कभी नहीं।

भूपति—प्रमाण के साथ गिरफ्तार, कहकर भूपति ने 'सरोरुह' का एक अंक बाहर निकाला। चारु ने देखा कि जिन लेखों को वह अपनी गुप्त सम्पत्ति समझकर अपने हस्त-लिखित मासिक-पत्र में सञ्चय करके रखती जा रही थी, वे ही लेख लेखक-लेखिका के नाम के साथ 'सरोरुह' में प्रकाशित हुए हैं।

आश्चर्य-विह्वला चारु जैसे काष्ठवत हो गयी। मानो किसी ने उसके बड़े प्यार से पाले हुए पक्षी को पिंजड़े का दरवाजा खोलकर उड़ा दिया हो। भूपति से पकड़े जाने की लाज को भूलकर, विश्वासघाती अमल के प्रति मन ही मन वह बहुत ही रुष्ट हो गयी।

"और इसको तो देख लो!" कहकर विश्वबन्धु पत्र निकाल कर भूपति ने चारु के सामने रख दिया। उसमें 'लेखनशैली' नामक एक निबन्ध प्रकाशित हुआ था।

चारु ने हाथ से ठेलकर कहा, इसे पढ़कर मैं क्या करूँगी? अमल के प्रति क्रुद्ध होने के कारण और किसी दूसरी तरफ उसका मन नहीं लग रहा था, परन्तु भूपति ने जोर देकर कहा—एक बार पढ़कर देख तो लो।

अन्त में चारु ने दृष्टि दौड़ा दी। आधुनिक कुछ लेखकों की भावाडम्बर से युक्त लेखन-शैली को गाली देकर लेखक ने बहुत कड़ा लेख लिखा है। उसमें मन्मथ दत्त और अमल की लेखन-शैली की बड़ी बड़ी आलोचना की गयी है—और उसी के साथ नवीन लेखिका श्रीमती चारुलता की भाषा की अकृत्रिम सरलता, सहज सरसता और चित्र-रचना की निपुणता की विशेष प्रशंसा की गयी है। लिखा गया है कि ऐसी रचना-प्रणाली का अनुसरण करके सफलता प्राप्त करने पर ही अमल कम्पनी का विस्तार होगा अन्यथा वे पूरे तौर से फेल हो जायँगे, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

भूपति ने हँसकर कहा—इसे ही कहते हैं गुरुघातक विद्या।

अपने लेखों की इस प्रशंसा से चारु खुश होकर फिर तुरन्त ही पीड़ित होने लगी। उसका मन मानो किसी तरह भी खुश न होना चाहा। प्रशंसा का लोभनीय-सुधापात्र मुँह के पास तक आते ही वह उसे ठेलने लगी।

वह समझ गयी कि, उसके लेखों को पत्रों में छपाकर

अमल ने अचानक उसे विस्मित कर देने का पक्का इरादा कर लिया था। अन्त में छप जाने के बाद निश्चय किया था कि किसी पत्र में प्रशंसायुक्त समालोचना निकल जाने पर दोनों को एक साथ दिखलाकर चारु का रोष शान्त करके उत्साह प्रदान करेगा। जब प्रशंसा निकली तब अमल आग्रहपूर्वक दिखलाने के लिये नहीं आया! इस समालोचना से अमल को चोट लगी है और चारू को इसे दिखलाना नहीं चाहता, इस नियत से ही वह इन पत्रों को एकदम छिपा गया है। आराम के लिए एकान्त में चारू जो बहुत छोटा सा साहित्य-नीड़ तैयार कर रही थी, अचानक प्रशंसा-विशालवृष्टि की एक प्रकार की बड़ी शिला आकर उसे एकदम गिरा देने के लिये तैयार है। चारू को यह बात एकदम ही अच्छी न लगी।

भूपति के जाने पर चारू अपने सोने के कमरे में पलंग पर चुपचाप बैठ गयी—सामने सरोरुह और विश्वबन्धु दोनों खुले पड़े थे।

हाथ में खाता लिए चारू को सहसा चकित कर देने के लिए अमल ने चुपचाप कमरे में प्रवेश किया। पास जाकर देखा कि विश्वबन्धु में निकली समालोचना को खोलकर चारु निमग्न चित्त से पढ़ रही है।

अमल फिर चुपचाप कमरे से बाहर चला गया। "मुझे

गाली देकर चारु के लेखों की प्रशंसा की गयी है, इससे आनन्द-विह्वल होने से चारु को अब होश नहीं है।" क्षणभर उसका सारा चित्त मानो कटु स्वाद से भर गया। चारु एक मूर्ख की लिखी समालोचना को पढ़कर, अपने को गुरु की अपेक्षा बड़ी समझने लगी है, यह निस्संदिग्धरूप से समझकर वह चारु पर बहुत ही रुष्ट हुआ। चारु के लिए यही उचित होता कि वह पत्रिका को टुकड़े टुकड़े फाड़कर आग में जलाकर राख बना देती !

चारु पर रंज होकर अमल ने मन्दा के कमरे के दरवाजे पर पहुँच, चिल्लाकर पुकारा—"मन्दा भाभी !"

मन्दा—आओ भाई आओ ! भला, बगैर कोशिश ही दर्शन तो मिला ! आज मेरा कितना अहोभाग्य है !

अमल—मैंने जो नये लेख लिखे हैं, क्या उसमें से दो एक सुन लोगी ?

मन्दा—कितने दिनों से सुनाऊँगा, सुनाऊँगा कहकर आशा देते आये हो किन्तु कभी सुनाया तो नहीं ! कोई जरूरत नहीं है भाई, फिर न मालूम किधर से कौन तुमसे रंज हो जाय तो भारी विपद में पड़ जाओगे—मेरा क्या बिगड़ेगा ?

अमल ने कुछ तीखी आवाज में कहा—रंज होगा कौन, किस कारण से, अच्छा वह तो पीछे देखा जायगा, इस समय

तो तुम इन्हें सुन लो। मन्दा मानो बड़े ही आग्रह के साथ शीघ्रता से संयमित होकर बैठ गयी। अमल स्वर ठीककर समारोह पूर्वक पढ़ने लगा।

अमल के लेख मन्दा के लिए एकदम विदेशी हैं, उसमें कहीं पर वह कोई किनारा नहीं देखती। इसलिए पूरे चेहरे पर आनन्द की हँसी लाकर अत्यन्त व्यग्रता के भाव से वह सुनने लगी। उत्साह से अमल की आवाज और भी तेज हो उठी।

वह पढ़ रहा था—अभिमन्यु ने जिस तरह गर्भावास के समय केवल व्यूह में प्रवेश करना सीख लिया था, व्यूह से निकलना नहीं सीखा था—नदी के स्रोत ने उसी तरह पर्वत के चट्टानों के उदर के बीच रहकर केवल सामने आगे की तरफ चलना ही सीखा था, पीछे लौटना नहीं सीखा। हाय नदी के स्रोत, हाय यौवन, हाय काल, हाय संसार, तुमलोग केवल सामने की ओर ही चल सकते हो—जिस पथ में संस्मरण के उपल-खण्डों को पार करके चले आते हो, उस पथ में फिर किसी दिन घूमकर नहीं देखते हो!" मनुष्य का मर्म ही केवल पीछे की ओर जाता है, अनन्त जगत् की तरफ घूमकर भी नहीं देखती।

ऐसे ही समय में मन्दा के दरवाजे के पास एक पर-

छाहीं पड़ी, उस परछाहीं को मन्दा ने देख लिया। किन्तु मानों देखा ही नहीं, ऐसा रुख करके अनिमेष दृष्टि से अमल के मुँह की तरफ देखती हुई अत्यन्त ध्यानपूर्वक पढ़ना सुनने लगी।

परछाहीं तुरन्त लौटकर चली गयी। चारू इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि अमल के आने पर उसके सामने विश्वबन्धु पत्र को विशेषरूप से लांछित करेगी और वचन-भंग करके अपने लेखों को मासिक-पत्रों में भेजने के कारण अमल की भर्त्सना भी करेगी।

अमल के आने का समय बीत गया, पर उसका दर्शन नहीं हुआ। चारू ने एक लेख ठीक करके रख दिया है, अमल को सुनाने की इच्छा उसकी है, वह लेख भी ज्यों का त्यों पड़ा है।

ऐसे ही समय में कहीं से अमल का कण्ठ-स्वर सुनाई पड़ा। यह तो मानों मन्दा के कमरे से आ रहा है। शरविद्ध की भाँति वह उठ पड़ी। कदम की आहट किये बिना ही वह दरवाजे के पास आकर खड़ी हो गयी। अमल जिस लेख को मन्दा को सुना रहा है, अब भी चारू ने उसे नहीं सुना है। अमल पढ़ रहा था—मनुष्य का मन ही केवल पीछे की तरफ चलता है, अनन्त जगत की तरफ घूमकर भी नहीं देखता

उजड़ा घर

चारू जिस तरह निःशब्द आयी थी, उसी तरह निःशब्द फिर लौटकर न जा सकी। आज एक के बाद दूसरी, तीसरी चोटों ने उसे एकदम धैर्य्यच्युत कर दिया था। मन्दा तो एक अक्षर भी नहीं समझ रही है और अमल एकदम बेवकूफ की तरह उसे सुनाकर तृप्ति प्राप्त कर रहा है, यह बात चिल्लाकर कह देने की उसकी इच्छा हुई। किन्तु कुछ भी न कहकर सशब्द पैरों की आवाज से वह उसका प्रचार कर आयी। शयनकक्ष में प्रवेश करके चारू ने धड़ाधड़ किवाड़ बन्द कर दिया।

अमल ने क्षणभर के लिए पढ़ना स्थगित कर दिया। मन्दा ने मुस्कुरा कर चारु की तरफ इशारा किया। अमल ने मन ही मन कहा, भाभी की यह कैसी उद्दंडता। क्या उन्होंने यही पक्का समझ लिया है कि मैं उनका खरीदा हुआ गुलाम हूँ! उनके सिवाय और किसी को लेख पढ़कर न सुना सकूँगा। यह तो भयानक जुल्म है! यह सोचकर वह और भी ऊँची आवाज में पढ़कर सुनाने लगा। पढ़ना खतम हो चुकने पर चारु के कमरे के सामने से होकर वह बाहर चला गया। एकबार उधर देखा तो दरवाजा बन्द था।

चारु ने पैर की आहट पहचान ली, अमल उसके

कमरे के पास चला गया—एकबार जरा भी नहीं रुका। क्रोध और क्षोभ से उसे रुलाई नहीं आयी। अपने नये लेखों का खाता निकालकर उसके प्रत्येक पन्ने को ऐंठकर टुकड़े टुकड़े फाड़कर उसने स्तूपाकार में परिणत कर दिया। हाय! किस अशुभ घड़ी में यह सब लिखने पढ़ने का काम शुरू किया गया था।

८

सन्ध्या के समय बरामदे के गमलों से फूलों की गन्ध आ रही थी। छिन्न भिन्न और इधर उधर बिखरे हुए बादलों के भीतर से स्निग्ध आकाश में तारे दिखाई पड़ रहे थे। आज चारु ने जूड़ा नहीं बाँधा है, कपड़े भी नहीं बदले हैं। खिड़की के पास अन्धकार में बैठी हुई है। वायु के मृदु झकोरे से उसके बिखरे हुए बाल उड़ रहे हैं और उसकी आँखों से इस तरह अश्रु क्यों प्रवाहित हो रहे हैं, यह वह स्वयं ही नहीं समझ रही है।

ऐसे ही समय में भूपति ने कमरे में प्रवेश किया। उसका मुँह बहुत मलीन है और हृदय भारी हो रहा है।

यह समय भूपति के आने का नहीं है। पत्र के लिए प्रूफ देखकर अन्तःपुर आने में उसे प्रायः ही देर होती है। आज सन्ध्या के बाद ही मानो किसी तरह की सान्त्वना की प्रत्याशा में चारु के पास आकर हाज़िर हो गया।

कमरे में बत्ती नहीं जल रही थी। खुली खिड़की के क्षीण प्रकाश में भूपति ने चारु को खिड़की के पास अस्पष्ट देख लिया, धीरे धीरे पीछे आकर खड़ा हो गया। पैरों की आहट पाकर भी चारु ने मुँह घुमाकर पीछे नहीं देखा। प्रस्तर-मूर्ति की भाँति स्थिर होकर बैठी रह गयी।

भूपति ने कुछ आश्चर्य में पड़कर पुकारा—चारु!

भूपति का कण्ठ-स्वर सुनकर—चकित होकर—चारु बहुत तेजी से उठ खड़ी हुई। भूपति आया है, इसका ख्याल उसे नहीं था। भूपति ने चारु के सिर के बालों को सहलाते हुए स्नेहपूर्ण-स्वर में पूछा—अन्धेरे में तुम बिलकुल ही अकेली बैठी हो चारु? मन्दा कहाँ गयी है?

चारु को जिस तरह की आशा लगी हुई थी आज एक भी नहीं सिद्ध हुई। उसने अवश्य ही समझ लिया था कि अमल आकर क्षमा प्रार्थना करेगा—इसलिए तैयार होकर वह प्रतीक्षा कर रही थी। परन्तु आशा विपरीत होते देख वह अपने को रोक न सकी—एकदम रो उठी।

भूपति ने घबड़ाकर, व्यथित होकर पूछा—चारू, क्या हो गया है तुम्हें ?

चारू को क्या हुआ है यह बतलाना कठिन है। ऐसे ही कुछ हो गया है। विशेष कोई बात नहीं है। अमल ने अपने नये लेख उसको न सुनाकर मन्दा को सुनाया है, इस बात को लेकर भूपति के पास वह क्या नालिश करे। सुनकर क्या भूपति न हँसेगा ? इस तुच्छ बात में भारी नालिश का विषय किस स्थान पर छिपा हुआ है, उसे ढूँढ़कर निकालना चारू के लिए असाध्य है। अकारण ही वह क्यों इतना अधिक कष्ट पा रही है, इसे ही पूरे तौर से न समझ सकने से उसके कष्ट की मात्रा और भी बढ़ गयी है।

भूपति—बोलो न चारू, तुम्हें क्या हो गया है ? क्या मैंने तुम्हारे साथ कुछ अन्याय किया है। तुम तो जानती ही हो कि काम के झमेले में मैं किस तरह पड़ा रहता हूँ, यदि तुम्हारे मन में मैंने कोई चोट पहुँचाई हो तो मैंने अपनी इच्छा से नहीं, यह तुम विश्वास रखो। भूपति ऐसे विषय में प्रश्न कर रहा है, जिसका एक भी जवाब नहीं दिया जा सकता, इस कारण चारू मन ही मन अधीर हो उठी। सोचने लगी, यदि भूपति इस समय छोड़ दे तो जान बच जाय।

दूसरी बार भी कोई उत्तर न पाकर भूपति ने स्नेहभरे

स्वर में कहा—मैं बराबर तुम्हारे पास नहीं आ सका चारू, इसके लिये मैं अपराधी हूँ, किन्तु अब फिर ऐसा न होगा। अब से दिन रात अखबार लेकर ही न पड़ा रहूँगा। मुझे तुम जितना चाहोगी, उतना ही पाओगी।

चारू ने अधीर होकर कहा—इसलिए नहीं।

भूपति ने कहा—तब किसलिए ?—कहकर पलंग पर बैठ गया।

चारू हृदय में सुलगते हुए क्रोध को संवरण न कर सकी। वह अनमने स्वर में बोली—इस बात को अभी रहने दो, रात को बताऊँगी।

भूपति ने क्षणभर स्तब्ध रहकर कहा—अच्छा अभी रहने दो—कहता हुआ उठकर चला गया। वह अपनी कोई बात कहना चाहता था, परन्तु न कह सका।

भूपति के मन में एक तरह का क्षोभ पैदा हो गया है, यह बात चारू से छिपी न रही। मन में सोचा फिर पुकारूँ। परन्तु बुलाकर कौनसी बात करेगी। अनुताप ने उसे विद्ध कर दिया, किन्तु खोजने पर उसे उसके प्रतिकार का कोई उपाय नहीं दिखाई पड़ा।

रात हुई। चारू ने आज बड़े ही यत्न के साथ भूपति के लिए रात्रि का भोजन परोसा और हाथ में पंखो लेकर

बैठ गयी।

ऐसे ही समय उसने सुना कि मन्दा ऊँची आवाज में पुकार रही है—ऐ ब्रज, ब्रज!—ब्रज के हाजिर होने पर उसने पूछा—अमल बाबू ने क्या भोजन कर लिया है?—ब्रज ने उत्तर दिया, हाँ, कर लिया है। मन्दा ने कहा, भोजन कर चुके, पर अब तक पान लेकर नहीं गये? मन्दा ब्रज को फटकारने लगी।

ऐसे ही समय में भूपति अन्तःपुर में पहुँचकर भोजन करने के लिये बैठ गया—चारू पंखा झलने लगी।

चारू ने आज निश्चय कर लिया था कि वह प्रफुल्ल और स्निग्ध भावों से बहुत तरह की बातचीत करेगी। पहले से ही बातचीत करने का विषय सोचकर तैयार होकर बैठी हुई थी। किन्तु मन्दा का कण्ठ स्वर सुनकर उसकी सभी तैयारी टूट गयी। भोजन के समय वह भूपति से कुछ भी बातचीत न कर सकी। भूपति भी अत्यन्त उदास और अनमना-सा हो गया था, उसने अच्छी तरह भोजन नहीं किया। चारू ने केवल एक बार पूछा, कुछ खा नहीं रहे हो क्यों?

भूपति ने प्रतिवाद के रूप में कहा, क्यों? कम तो नहीं खाया।

शयनगृह में दोनों की मुलाकात होने पर भूपति ने कहा, आज रात को तुमने कुछ बतलाने के लिए कहा था।

चारू ने कहा—देखो, कुछ दिनों से मन्दा का आचरण मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। उसको यहाँ रखने का मुझे और साहस नहीं हो रहा है?

भूपति—क्यों, उसने क्या किया है?

चारू—अमल के साथ वह इस तरह बर्ताव करती है कि देखने पर लज्जा मालूम होती है। भूपति ने हँसकर कहा, तुम पागल तो नहीं हो गई। अमल तो लड़का है, अभी हाल हाल का ही तो लड़का है।

चारू—तुम तो अपने घर की कुछ भी खबर नहीं रखते, केवल बाहर की खबर पाने के लिये घूमते रहते हो! जो हो, बेचारे भैया के लिये मैं चिन्ता में हूँ! वे कब खाना खा चुके या नहीं, इसकी कोई भी खोज मन्दा नहीं रखती, पर अमल के पान से चूना खिसक जाने पर तुरन्त ही नौकर चाकरों से झगड़ कर उपद्रव करने लगती है।

भूपति—औरतों का स्वभाव ही सन्दिग्ध रहता है। क्या ऐसी बात कही जाती है? चारू ने रंज होकर कहा—अच्छा, बहुत अच्छा, हमलोग सन्दिग्ध हैं, पर अपने मकान के अन्दर मैं ऐसी बेशर्मी न होने दूँगी, यह बतला देती हूँ।

चारू की इन सब अमूलक आशंकाओं से भूपति मन ही मन हँस उठा और खुश भी हुआ। गार्हस्थ-धर्म में किसी प्रकार के कलंक का प्रवेश न हो, इसको ध्यान में रखते हुए साध्वी स्त्रियों में जो अतिरिक्त सतर्क दृष्टि, निक्षेप करने की रुचि दिखलाई पड़ती है उसमें एक माधुर्य और महत्व है।

श्रद्धा और स्नेह के आवेश में भूपति ने चारू का ललाट चूमकर कहा—इसके लिये और कष्ट उठाने की जरूरत न पड़ेगी। उमाप्रद प्रैक्टिस करने के लिए मैमनसिंह जा रहा है, मन्दा को भी साथ लेता जायगा।

अन्त में अपनी दुश्चिन्ता और इन सब अप्रीतिकर आलोचनाओं के हटा देने के अभिप्राय से भूपति ने मेज से एक खाता उठाकर कहा—अपनी लिखी कोई चीज सुनाओ न चारू!

चारू ने खाता छीनकर कहा—यह तुमको अच्छा न लगेगा, मजाक करने लगोगे।

इस बात से भूपति के मन में कुछ दुःख हुआ, किन्तु उसे छिपाकर हँसते हुए कहा—अच्छा, मैं मजाक न करूँगा। ऐसा स्थिर होकर सुनूँगा कि तुमको मालूम होने लगेगा कि मैं सो गया हूँ।

किन्तु भूपति को सफलता नहीं मिली—देखते देखते

खाता बही, कई तरह के आवरणों और आच्छादनों के अन्दर गायब हो गई।

६

भूपति चारु को सब बातें न बतला सका। उमापति भूपति के अखबार का मैनेजर था। चन्दा वसूल करना, छापाखाना और बाजार के लेनदेन का काम सँभालना, नौकरों का वेतन देना आदि सब कामों का भार उमापति पर ही था।

इसी बीच अचानक एक दिन कागजवाले की एक चिट्ठी वकील की मार्फत मिलने पर भूपति आश्चर्य में पड़ गया। भूपति से उसने २७०० रुपये की माँग पेश की थी। भूपति ने उमापति को बुलाकर पूछा, यह क्या बात है? ये रुपये तो मैंने तुम्हें दे दिये हैं। कागजवाले का चार पांच सौ रुपये से अधिक रुपया तो न होना चाहिये।

अमल ने कहा—अवश्य ही इन लोगों ने गलती से

ऐसा किया है।

किन्तु असल बात अब छिपी न रह सकी। कुछ दिनों से उमापद इसी तरह धोका देता आ रहा था। केवल कागज के बारे में ही नहीं, भूपति के नाम पर उमापति ने बाजार में बहुत रुपया कर्ज कर लिया था। गाँव पर वह एक पक्का मकान बनवा रहा है, उसके माल-मसाले के खर्च का कुछ हिसाब भी उसने भूपति के नाम पर लिख दिया है।

जब एक दम कोई भी बात छिपी न रह गयी तब उसने रूखे स्वर में कहा—मैं तो फकीर नहीं हो रहा हूँ, काम करके धीरे-धीरे सब देना चुका दूँगा। तुम्हारा एक पैसा भी यदि बाकी रह जाय तो मेरा उमापति नाम नहीं।

उसके नाम की सचाई पर विश्वास कर, भूपति को सान्त्वना नहीं हो सकती थी। रुपये के नुकसान से भूपति को उतनी चोट नहीं लगी, किन्तु अकस्मात् इस विश्वास-घातकता से उसे चारो तरफ शून्य दिखाई पड़ने लगा।

उस दिन समय से पहले ही वह मकान के अन्दर चला गया था। दुनियाँ में अवश्य ही विश्वास का एक स्थान है, इसे क्षणभर के लिये अनुभव कर लेने की उसकी इच्छा बलवती हो उठी थी। उस समय अपने दुःख में पड़ी हुई चारू, सन्ध्या का दीप बुझाकर खिड़की के पास अँधेरे में बैठी हुई थी।

उमापद दूसरे ही दिन मैमनसिंह जाने के लिए तैयार हो चुका था। बाजार के महाजनों को यह हाल मालूम होने के पहले ही वह हट जाना चाहता है। भूपति ने घृणा के जोश में आकर उमापद से कुछ भी बातचीत नहीं की। भूपति की मौनावस्था को उमापद ने अपने लिए सौभाग्य का लक्षण समझ लिया था।

अमल ने आकर पूछा—मन्दा भाभी, यह क्या बात हुई? माल असबाब बाँधकर तैयारी होने लगी?

मन्दा—हाँ, भाई जाना तो पड़ेगा ही, क्या चिरकाल तक यहाँ रह सकूँगी?

अमल—कहाँ जा रही हो?

मन्दा—अपने देश, देहात में।

अमल—क्यों, यहाँ कौन-सी असुविधा हो गयी?

मन्दा—मुझे असुविधा किस बात की होगी। तुम लोगों के साथ थी, सुख से ही थी! किन्तु किसी और को जो असुविधा होने लगी!—कहकर चारू के कमरे की तरफ कटाक्ष किया।

अमल गम्भीर होकर चुप हो रहा। मन्दा ने कहा—छिः क्या ही शर्म की बात है। बाबू साहब ने मन में क्या सोचा होगा?

इस बात को लेकर अमल ने अधिक आलोचना नहीं की। उसने यह निश्चय किया कि चारू ने उन लोगों के सम्बन्ध में ऐसी बात कही है जो कहना उचित नहीं था।

अमल मकान से निकल बाहर चला गया और इधर उधर सड़कों पर घूमने लगा। उसकी इच्छा हुई कि इस मकान में फिर लौट जाना ठीक न होगा। यदि भाभी की बात पर विश्वास कर भैया उन्हें अपराधी समझ लिये हों उस हालत में मन्दा ने जो रास्ता पकड़ा है, मुझे भी उसी रास्ते से चलना चाहिए। मन्दा की विदाई एक तरह से मेरे लिए भी निर्वासन का आदेश है—यह बात केवल मुँह खोलकर नहीं कही गयी है, इतना ही समझ लेना चाहिए। इसके बाद का कर्तव्य बिलकुल स्पष्ट है—और एक क्षण भी यहाँ ठहरना ठीक नहीं है। किन्तु भैया मेरे प्रति इस तरह की अन्यायपूर्ण धारणा अपने मन में पोषण करेंगे—ऐसा नहीं समझता था। इतने दिनों से वे पूरे विश्वास से मुझे अपने घर में स्थान देकर पालन करते आ रहे हैं, उस विश्वास पर मैंने कभी आघात नहीं पहुँचाया, यह बात भैया को न समझाकर मैं किस तरह जा सकता हूँ।

उस समय भूपति आत्मीय की कृतघ्नता, महाजनों का तकादा, उच्छृङ्खल हिसाब किताब और खाली तहवील लिये

सिर पर हाथ रखकर सोच में पड़ा हुआ था। उसके इस शुष्क मनोदुःख में कोई साझेदार नहीं था—चित्त की वेदना और ऋण के भार के साथ अकेला खड़े रहकर युद्ध करने के लिए भूपति तैयार हो रहा था।

ऐसे ही समय में अमल ने तूफान की भाँति कमरे में प्रवेश किया। भूपति ने अगाध चिन्ता के बीच से हठात् आश्चर्य में पकड़कर अपनी निगाह दौड़ाई। कहा, क्या समाचार है अमल?—अचानक मालूम हुआ, मानों अमल और कोई भयानक दुःसम्वाद लेकर आया है।

अमल ने कहा—भैया, मेरे प्रति क्या तुम्हारे मनमें किसी तरह का सन्देह उत्पन्न होने का कारण उपस्थित हुआ है?

भूपति ने आश्चर्य में पड़कर कहा—तुम्हारे प्रति सन्देह! मन ही मन सोचा, दुनियाँ को जैसा देख रहा हूँ उससे किसी दिन अमल पर भी सन्देह करूँगा, इसमें आश्चर्य नहीं है?

अमल—क्या भाभी ने मेरे चरित्र के सम्बन्ध में तुमसे किसी तरह की शिकायत की है?

भूपति ने सोचा—ओः, यह बात। बच गये! स्नेह का अभिमान! उसने सोचा था सब बर्बादी के बाद शायद कोई और विपत्ति आ गयी, किन्तु बड़ी विपत्तियों के समय भी इन मामूली बातों पर ध्यान दिया जाता है। कोई दूसरा मौका

होता तो भूपति अमल का परिहास करता। किन्तु आज उसका चित्त खिन्न था और मन में प्रफुल्लित बिलकुल ही नहीं था। उसने कहा—क्या तुम पागल हो ?

अमल ने पूछा—क्या भाभी ने आपसे कुछ भी नहीं कहा।

भूपति—भाभी तुम्हें प्यार करती हैं। तुम्हारी शिकायत उनके मुँह से कभी नहीं सुनी। हाँ, तुम्हारे लेखों के सम्बन्ध में जो कटु समालोचना उस पत्रिका में निकली थी, उससे उनका मन बहुत ही दुःखित और लज्जित है।

अमल इस कथन से चकित हो गया। वह जिस शंका-समाधान के लिए व्यग्र होकर आया था, वह पूर्ववत् बना रहा।

१०

भूपति विपत्ति के दिनों में भी बहुत ही शान्त भाव से अपना काम सँभालने लगा। परन्तु हृदय के अन्दर उमापति की विश्वासघातकता से जो ज्वाला धधक रही थी, उसका वेग ज्यों का त्यों बना रहा।

उसके हृदय की व्यथा को कोई नहीं जानता था। दुःख की बातें, विपत्ति के समाचार सुनकर मौखिक सहानुभूति दिखलाने वाले दुनिया में बहुत मिलते हैं, किन्तु उस दुःख विपत्ति में भाग लेने, उसे कम करने या उसे एकदम दूर करने की कोशिश करने वालों की संख्या इस संसार में नहीं के बराबर है। जिस व्यक्ति पर निकट आत्मीय समझकर व्यापार के दायित्व का भार सौंपा गया था, उसके दुराचरण से भूपति का चित्त विचलित हो उठा। यह उसके जीवन में प्रथम कटु अनुभव था।

तरह तरह की भावनाओं से आक्रान्त अमल की खिन्नता भी, उसके हृदय में कष्ट देने लगी। वह सोचने लगा—एकाएक अमल इतना उदास क्यों हो गया? मैंने तो अपनी जानकारी में कभी उसके साथ कोई भी ऐसा बर्ताव नहीं किया, जिससे उसके दिल में किसी तरह की चोट लगे।

अन्त में उसने चारु से इस सम्बन्ध में पूछकर अमल की घबड़ाहट का समाधान करने का निश्चय किया।

उस दिन सन्ध्या को ही, भूपति पुनः अन्तःपुर में गया और इधर उधर की दो चार बातें करने के बाद, उसने अमल का प्रसङ्ग छेड़ दिया। परन्तु चारु ने जो कुछ उत्तर दिया उसका शारांश यही था कि मन्दा का आचरण कभी शोभनीय नहीं कहा जा सकता और इस सम्बन्ध में कल रात को जो कुछ उसने कहा वह यथार्थ है, उसमें तिलमात्र भी शंका नहीं की जा सकती। अपनी पूर्वोक्त बातों को दुहराकर वह अनमनी सी होकर कुछ और अधिक चिन्ताग्रस्त हो गयी।

भूपति के मनोभाव में कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ। अमल के प्रति उसके मन में पहले जिस तरह का स्नेह वात्सल्य था वह अब भी ज्यों का त्यों बना रहा। उसने अमल को बुलवाया। थोड़ी देर के बाद अमल ने आकर नम्र स्वर में पूछा, भैया क्या कोई जरुरी काम है?

भूपति—बैठो अमल! इतनी घबराहट में क्यों रहते हो? तुमको किसी बात की चिन्ता सता रही है। अमूलक आशंकाओं से मनको निरुत्साह बना देना तुम्हारे जैसे नवयुवक को शोभा नहीं देता। तुमने जो कुछ मुझसे पूछा था, उसका समाधान अपनी भाभी के सामने कर लो। मेरा

हृदय तुम्हारे प्रति पूर्ववत् साफ और निष्कपट है।

अमल की आन्तरिक व्यथा और भी बढ़ गयी। वह किस बात पर तर्क वितर्क करे, यह उसकी समझ में नहीं आया। प्रीति में कपट का प्रवेश होने से परिणाम कभी अच्छा नहीं होता।

अमल की चिन्ताग्रस्त हालत में बैठे देखकर भूपति ने कहा, अच्छा! अब मैं एक जरूरी काम से जा रहा हूँ। मेरे वहाँ से लौटने पर, तुम फिर एकान्त में मुझसे मिल लेना।

भूपति के चले जाने पर अमल चुपचाप बैठा रहा। चारु भी मौन रही। मौन भंग करने का किसी ने प्रयास नहीं किया।

चारु सोचने लगी—क्या यह अमल है? इतिहास की घटनाओं की तरह एक एक करके सभी बात उसे याद पड़ने लगीं। फिर वह चकित होकर उठ खड़ी हुई। पर्वत-मार्ग से चलते-चलते हठात् बादलों के छा जाने से, फैले हुए अन्धकार के दूर हो जाने पर, मानों पथिक ने देख लिया कि वह हजारों हाथ के अतल गढ़े में कदम बढ़ाने के लिये तैयार हो रहा था। कुछ भी बातचीत न करके अमल एकदम तेजी से कमरे से निकल कर बाहर चला आया।

अमल के इस अद्भुत आचरण का कुछ भी मतलब चारु न समझ सकी।

११

दूसरे दिन भूपति ने फिर असमय में ही शयनकक्ष में प्रवेश करते हुए कहा—चारु, अमल के विवाह का एक बहुत अच्छा प्रस्ताव आया है।

चारु अनमनी-सी बोली—अच्छा, क्या आया है ?

भूपति—विवाह का प्रस्ताव।

चारु—क्यों, मैं क्या पसन्द नहीं आयी ?

भूपति ठठाकर हँस पड़ा—तुमको पसन्द किया है या नहीं यह बात अभी अमल से पूछी नहीं गयी। यदि पसन्द भी किया होगा तो मेरा भी तो छोटा-सा कुछ दावा है, उसे मैं तुरन्त छोड़ भी तो नहीं सकता।

चारु—आः ! क्या बकवाद कर रहे हो, मेरी समझ में कुछ नहीं आता। तुमने तो कहा कि तुम्हारे विवाह का सम्बन्ध आ रहा है।

चारु का मुँह लाल हो उठा।

भूपति—तब क्या दौड़कर तुमको खबर देने के लिए चला आता ? पुरस्कार पाने की भी तो आशा नहीं थी।

चारु—अमल के विवाह की बात कह रहे थे ? ठीक है।

तो फिर देर क्यों ?

भूपति बर्दवान के वकील रघुनाथ बाबू अपनी लड़की के साथ विवाह करके अमल को इंग्लैण्ड भेजना चाहते हैं।

चरू ने आश्चर्य में पड़कर पूछा—इंगलैण्ड ?

भूपति—हाँ इङ्गलैण्ड !

चारू—अमल इङ्गलैण्ड जायगा ! अच्छा ! बहुत अच्छा हुआ, उत्तम बात हुई। तुम एक बार अमल को अपनी राय बतलाकर स्थिति को समझ तो लो।

भूपति—मेरे कहने के पहले तुम यदि उसे बुलाकर एक बार समझा दोगी तो क्या अच्छा न होगा ?

चारू—मैंने तीन हजार बार कहा है। वह मेरी कोई भी बात नहीं मानता। मैं उससे न कह सकूँगी।

भूपति—क्या तुम समझती हो कि वह न मानेगा ?

चरू—और भी तो अनेक बार कोशिश की गयी, किसी तरह भी तो राजी नहीं हुआ।

भुपति—किन्तु इस बार के इस विवाह-प्रस्ताव को ठुकराना उसके लिए उचित न होगा। मुझपर तो बहुत कर्ज हो गया है, अमल को तो मैं उस तरह अब आश्रय नहीं दे सकता।

भूपति ने अमल को बुलवाया। अमल के आने पर उससे कहा—बर्दवान के वकील रघुनाथ बाबू की लड़की के साथ

तुम्हारे विवाह की बातचीत हो रही है। उनकी इच्छा है कि विवाह करके तुमको इंगलैण्ड भेज दें। तुम्हारी राय क्या है?

अमल ने कहा—यदि आपकी आज्ञा हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

अमल की बात सुनकर दोनों आश्चर्य में पड़ गये। कहते ही वह तुरन्त राजी हो जायगा, यह किसी को भी मालूम नहीं था।

चारू ने तीखी आवाज से मजाक करके कहा—अपने भैया की आज्ञा पाकर ही ये अपनी सम्मति देंगे, यह मुझे मालूम नहीं था! मेरी बातों को सुनने के लिए छोटा भाई बाध्य थोड़े ही है। भैया पर इतने दिनों तक भक्ति कहाँ छिपी थी अमल बाबू?

अमल ने कुछ भी उत्तर न देकर कुछ हँसने की कोशिश की।

अमल को निरुत्तर देखकर चारू ने मानो उसे होश में लाने के लिये, दुगुने जोश भरे शब्दों में कहा—इससे तो अच्छा है कि तुम स्वयं चाहते हो और यही इच्छा भी है। इतने दिनों तक बनावटी रूप दिखलाकर यह कहते रहने की क्या जरूरत थी कि मैं विवाह करना नहीं चाहता? पेट में भूख मुँह में लाज!

भूपति ने उपहास के रूप में कहा—तुम्हारे ही प्रेम के फेर में पड़कर इतने दिनों तक इसने भूख को दबा रखा था—कहीं तुम्हारे मन में डाह न पैदा हो जाय।

इस बात से चारू लाल होकर हल्ला मचाने लगी और कहा—डाह! यह तुम क्या कह रहे हो। मेरे मन में क्यों डाह पैदा होगी। इस तरह की बातें करना बहुत भारी अन्याय है।

भूपति—यह देखो न! क्या अपनी स्त्री से कोई हँसी मजाक भी न कर सकूँगा!

चारू—नहीं, इस तरह का मजाक मुझे बिल्कुल ही अच्छा नहीं लगता!

भूपति—अच्छा, मैंने बहुत अपराध किया। माफ करो? जो हो विवाह की बात तो पक्की हो गयी न?

अमल ने कहा—हाँ।

चारू—लड़की भली है या बुरी है, यह देखने के लिए जाना भी शायद अच्छा नहीं मालूम हुआ। तुम्हारी जो एकदम ऐसी दशा हो गयी है, इसका तो अब तक कुछ भी आभास नहीं मिला था!

भूपति—अमल! यदि लड़की को देख लेने की इच्छा हो तो इसका बन्दोबस्त करूँ। मैंने पता लगाया है कि

लड़की बहुत ही सुन्दर है।

अमल—नहीं, देखने की मैं कोई जरूरत नहीं समझता।

चारू—उसकी बात क्यों सुनते हो? क्या कभी ऐसा भी होता है कि कन्या न देखकर विवाह हो जाय? वह भले ही न देखना चाहे, हमलोग तो देख लें!

अमल—नहीं भैया, अब इसके लिए व्यर्थ ही मैं देर करने की कोई जरूरत नहीं है।

चारू—जरूरत नहीं है। क्यों? देर करने से छाती फट जायगी, सिर पर टोपी रखकर अभी घर से निकल जाओ! शायद तुम्हारे सात राजाओं की सम्पत्ति, माणिक को कोई छीन न ले जाय।

अमल को चारू किसी तरह के मजाक से भी, जरा भी विचलित न कर सकी।

चारू—इंग्लैण्ड भाग जाने के लिये शायद तुम्हारा मन उचट रहा है? क्यों, यहाँ हम लोग तुम्हें मारपीट रहे थे या पकड़ रहे थे। हैटकोट पहिनकर साहब बने बिना आजकल के लड़कों का मन नहीं लगता। बबुआ, विलायत से लौट आने पर हमलोगों की तरह काले आदमियों को पहचान तो सकोगे न?

अमल ने कहा—तो फिर विलायत जाने की जरूरत

ही क्या थी ।

भूपति ने हँसकर कहा—काली सूरत भूल जाने के लिये ही तो सात समुद्र पार किया जाता है। अच्छा डर किस बात का है चारु, हम लोग तो हैं ही, काले के भक्तों की कभी न होगी।

भूपति ने खुश होकर उसी समय वर्द्धमान पत्र लिखकर भेज दिया। विवाह का दिन निश्चित हो गया।

१२

इस अवस्था में अखबार बन्द कर देना पड़ा। भूपति खर्च चलाने में असमर्थ हो गया। जन-सेवा नामक निर्मल पदार्थ की जिस साधना में भूपति इतने दिनों तक एकाग्रचित्त से निमग्न था, उसे एक ही मुहूर्त में छोड़ देना पड़ा। भूपति के जीवन की सभी धारायें, जिस अभ्यस्त मार्ग में गत बारह वर्षों से अविराम गति से प्रवाहित होती आ रही थीं, वे मानो अचानक एक ही स्थान पर जल के बीच पड़ गयीं। इसके लिए भूपति बिलकुल तैयार नहीं था। अचानक रुकावट पड़ने वाले अपने इतने दिनों के समस्त उद्योग को वह कहाँ लौटाकर

ले जाय, यह कठिन समस्या उसके समक्ष नर्तन करने लगी। सभी कारोबार मानो उपवास करने वाले अनाथ बच्चों की भाँति भूपति के मुँह की तरफ देखने लगे, भूपति उन सबको अपने अन्तःपुर में करुणामयी, सेवापरायणा पत्नी के सामने लाकर खड़ा कर दिया।

पत्नी के मन में उस समय विविध चिन्ताएँ व्याप्त हो रही थीं। वह मन ही मन कह रही थी—यह क्या ही आश्चर्य की बात है ? अमल का विवाह होगा यह तो अच्छी बात है, किन्तु इतने दिनों के बाद हमलोगों को छोड़कर दूसरे के घर विवाह करके विलायत चला जायगा,' इससे उसके मन में एक बार कुछ द्विविधा उत्पन्न हुई ? इतने दिनों तक उसे हमलोगों ने इतने यत्न से रखा और ज्यों ही बिदाई लेने का जरा सा मौका मिला, त्यों ही कमर कसकर तैयार हो गया, मानों इतने दिनों से अवसर ढूँढ़ रहा था। परन्तु मुँह में कितना मीठापन, कितना प्रेम ! मनुष्य को पहचानना बहुत कठिन है ! कौन जानता था कि जो व्यक्ति इतना लिख सकता है उसके पास कुछ भी हृदय नहीं है।

उसने अपने हृदय की विशालता के साथ अमल के हृदय की तुलना करके, उस शून्य हृदय के प्रति अत्यन्त अवज्ञा दिखलाने की चेष्टा की। किन्तु ऐसा वह न कर

सकी। अन्दर ही अन्दर निरन्तर एक व्यथा का उद्वेग, उत्तप्त धूलि की भाँति, उसके अभिमान को धक्का दे देकर उठाने लगा।

कल ही अमल चला जायगा, फिर भी इधर कई दिनों से उसका दर्शन तक नहीं हुआ। हमलोगों के बीच आपस में एक तरह का जो मतभेद उपस्थित हो गया है, उसे मिटा देने का फिर मौका तक नहीं मिलेगा। प्रति क्षण चारु सोचती रही— अमल खुद ही आ जायगा—हम लोगों के इतने दिनों के खेल इस प्रकार टूट थोड़े ही जायँगे, किन्तु अमल तो आ ही नहीं रहा है! अन्त में विवश होकर चारु ने अमल को स्वयं बुलवाया।

अमल ने कहला भेजा कि थोड़ी देर में आ रहा हूँ। चारु अपने बरामदे की चौकी पर जाकर बैठी। सबेरे से ही घने बादल छा गये हैं—चारु अपने बिखरे हुए बाल समेट कर हाथ में पंखा लेकर झलने लगी। बहुत देर हो गई पर अमल का पता नहीं। उसके हाथ की पंखी रुक गयी। क्रोध, दुःख एवं अधैर्य से उसकी छाती फूल उठी। मन ही मन कहा—अमल नहीं आया तो हर्ज ही क्या!—किन्तु इतने पर भी पैर की आहट सुनते ही उसका मन दरवाजे की तरफ दौड़ जाने लगा।

उजड़ा घर

दूर गिर्जाघर में ग्यारह बजने की आवाज सुनाई पड़ी। स्नान कर चुकने पर अब भूपति भोजन करने आवेगा। अभी आधा घण्टा समय है, अब भी यदि अमल आ जाय! जैसे भी हो इतने दिनों के नीरव झगड़े को आज मिटा देना ही ठीक है—अमल को इस तरह बिदाई नहीं दी जा सकती। समान उम्र के देवर भौजाई के बीच जो बराबर का मधुर सम्बन्ध मौजूद है और तरह तरह के विचारों के संघर्ष, स्नेह के अनेक अत्याचार, सुखालोचनाओं से बिजड़ित चिरछायामय जो लता-मण्डप बना हुआ है, उसे क्या अमल आज धूलि में मिलाकर बहुत दिनों के लिये दूर चला जायगा? उसकी जड़ में क्या अन्तिम बार के लिए जल सींचकर न जायगा—अनेक दिनों से देवर भौजाई के बीच जो सम्बन्ध रहा है, उसका क्या यही अन्तिम अश्रुजल है।

प्रायः आध घण्टा समय और बीत चला। जूड़े को देखकर उसके एक गुच्छे में अँगुली डालकर चारू बड़ी तेजी से उसे बार बार लपेटने और खोलने लगी। आँसू रोकना कठिन हो गया, नौकर ने आकर कहा—माताजी, बाबू के लिए नारियल लेने की जरूरत है।

चारू ने आँचल से भण्डार की ताली खोलकर झनक करके नौकर के पैरों के नीचे फेंक दी। आश्चर्य में पड़कर

वह ताली लिये वहाँ से चला गया।

चारू की छाती के पास से मानो कोई चीज हठात् गले के पास तक जाने लगी।

ठीक समय पर भूपति हँसता हुआ भोजन करने के लिए आया। हाथ में पङ्खा लिए चौके में उपस्थित होकर चारू ने देखा कि अमल भी भूपति के साथ आया है। चारू ने उसके मुँह की तरफ नहीं देखा।

अमल ने पूछा—भाभी, तुमने मुझे बुलाया है?

चारू ने कहा—नहीं, अब कोई जरूरत नहीं है।

अमल—तब तो अब जाना चाहता हूँ, अभी मुझे माल असबाब बहुत कुछ ठीक करना है।

उस समय चारू ने तेज निगाह से एक बार अमल के मुँह की तरफ देखा—कहा, जाओ।

अमल चारू के मुँह की ओर एक बार देखकर चला गया।

भोजन कर चुकने पर भूपति प्रायः कुछ समय तक चारू के पास बैठा करता है। परन्तु आज लेनदेन के हिसाब-किताब में अत्यन्त व्यस्त होने के कारण उसने कुछ उदास होकर कहा—आज मैं और अधिक देर तक यहाँ नहीं रह सकूँगा।.....आज बहुत झंझट है।

चारु ने कहा—जाओ न।

भूपति ने सोचा चारु नाराज हो गयी। कहा, इसका मतलब यह नहीं है कि अभी तुरन्त ही चला जाऊँगा। कुछ विश्राम करने के पश्चात्—कहकर बैठ गया। फिर उसने देखा कि चारु उदास है। भूपति अनुतप्त भाव से बहुत देर तक बैठा रहा, किन्तु किसी तरह भी बातचीत का सिलसिला न जमा सका। बड़ी देर तक बातचीत करने की चेष्टा करके भूपति ने कहा—अमल तो कल चला जायगा, कुछ दिनों तक शायद तुमको अकेली रहने में उदास मालूम होगा।

इस बात का कुछ भी उत्तर न देकर चारु मानो कोई चीज लाने के लिए झटपट दूसरे कमरे में चली गई। कुछ देर तक इन्तजारी में रहकर भूपति बाहर चला गया।

चारु ने आज अमल के चेहरे की तरफ गौर से देखकर मालूम कर लिया कि इधर कुछ ही दिनों में अमल बहुत दुबला हो गया है—उसके चेहरे पर जवानी की वह स्फूर्ति नहीं रह गयी है। इससे चारु को सुख के साथ साथ दुःख भी मालूम हुआ। आसन्न वियोग से ही अमल दुबला दुबला हो रहा है, इसमें चारु को कुछ भी सन्देह नहीं रहा—किन्तु इस हालत में भी अमल का ऐसा व्यवहार

क्यों है? वह किस कारण दूर दूर भागा फिरता है। बिदाई के समय को वह जानबूझकर क्यों विषाक्त कर रहा है?

बिस्तर पर लेटकर वह सोचने लगी। सोचते सोचते अचानक चकित होकर वह उठ बैठी। हठात् मन्दा की बात याद पड़ी। कदाचित् अमल मन्दा को प्यार करता हो। मन्दा चली गयी, शायद इसी कारण ही अमल इस प्रकार—छिः! अमल का मन क्यों ऐसा हो सकता है? इतना तुच्छ विचार? ऐसा कलुषित भाव? विवाहित रमणी के प्रति उसका मन आकर्षित हो जायगा? असम्भव! सन्देह को बड़ी कोशिश से उसने हटा देना चाहा—किन्तु सन्देह उसे जोरों से पकड़े रहा।

धीरे धीरे बिदाई का समय आ गया—बादल आकाश में छाये रहे! अमल ने आकर काँपती हुई आवाज में कहा—भाभी, मेरे जाने का समय हो गया है, तुम अब से भैया की देखभाल करना! उनकी हालत बहुत ही संकटपूर्ण है—तुम्हारे सिवा उनके लिए सान्त्वना का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

भूपति को बराबर उदास और चिन्तित देखकर अमल ने उनकी दुर्दशा का कारण मालूम कर लिया था। भूपति किस तरह चुपचाप अपनी मनोव्यथा के साथ युद्ध कर रहा

है, किसी से सहायता या सान्त्वना न मिलने पर भी अपने आश्रित और आत्मीय स्वजनों को इस संकट में विचलित न होने दिया—इन बातों को सोचकर वह चुप हो रहा। इसके बाद उसने चारू की हालत पर विचार किया, अपनी स्थिति पर भी विचार किया और चेहरा लाल हो उठा। जोर देकर मन ही मन बोला, चूल्हे में जाय आषाढ़ का और अमावस्या का प्रकाश। बैरिस्टर होकर लौट आने पर यदि मैं भैया को मदद कर सकूँ तभी मैं मनुष्य हूँ।

पिछली रात की सारी रात जागकर चारू ने निश्चय कर लिया था कि विदा करते समय अमल से क्या बातचीत करेगी। सहास्य, अभिमान और प्रफुल्ल उदासीनता से मज मजकर उन बातों का उसने खूब अभ्यास कर रखा था, किन्तु विदाई के समय चारू के मुँह से एक बात भी नहीं निकली। उसने केवल कहा—अमल, पत्र लिखोगे तो।

अमल ने जमीन पर मस्तक रखकर प्रणाम किया—दौड़कर शयनगृह में जाकर चारू ने किवाड़ बन्द कर लिया।

१३

भूपति बर्दवान गया और अमल का विवाह कर चुकने के बाद उसको इंगलैण्ड के लिए रवाना कराकर घर लौट आया।

चारो ओर से चोटें खाकर कष्ट-सहिष्णु भूपति के मन में बाहरी दुनिया के प्रति एक तरह के वैराग्य का भाव आ गया था। सभासमितियों में जाना, समाज के लोगों से मिलना जुलना कुछ भी उसे अच्छा नहीं लगता था। यही ख्याल आया कि इन सबका लेकर मैंने इतने दिनों तक अपने को ही धोखा दिया—जीवन के सुख के दिन व्यर्थ ही बह गये—सार भाग को मैंने कूड़ेखाने में फेंक दिया।

भूपति ने मन ही मन कहा—जाने दो, अखबार बन्द हो गया, अच्छा ही हुआ। छुटकारा मिला। सन्ध्या समय अन्धकार का सूत्रपात देखते ही पक्षी जिस तरह अपने घोसलों में लौट आते हैं, उसी तरह भूपति अपने बहुत दिनों के विचरणक्षेत्र को त्यागकर अन्तःपुर में चारू के पास चला आया। मन में निश्चय किया, बस अब और कहीं नहीं, यहीं पर अब मेरी स्थिति रहेगी। अखबार के जिस

जहाज को लेकर सारा दिन खेलता रहता था, वह डूब गया, अब घर चला जाऊँ।

सम्भवतः भूपति के मन में एक साधारण संस्कार या विचार था कि स्त्रियों पर अधिकार स्थापित करने की जरूरत ही नहीं पड़ती। स्त्रियाँ ध्रुवतारा की भाँति अपना प्रकाश खुद ही जला रखती हैं, वह हवा में नहीं बुझता और उसमें तेल की भी जरूरत नहीं पड़ती। जब बाहर टूटना फूटना शुरू हुआ तब अतःपुर में किसी स्थान पर दूसरा फूट निकला है या नहीं, यह एक बार जॉच करके देखने की इच्छा भी कभी भूपति के मन में नहीं उत्पन्न हुई थी।

शाम को भूपति वर्द्वान से घर लौट आया। शीघ्रता से मुँह धोकर खाना भी खा लिया। अमल के विवाह और बिलायत यात्रा का शुरू से आखीर तक का हाल सुनने के लिये चारू बहुत ही उत्सुक हो गयी होगी, यह समझ कर आज भूपति ने कुछ भी देर नहीं की। भूपति सोने के कमरे में जा, बिस्तर पर लेट कर गड़गड़े का लम्बा नल खींचने लगा। चारू अब तक अनुपस्थित है, शायद घर का काम धंधा कर रही होगी। तम्बाकू जल जाने पर थके हुए भूपति को नींद आने लगी। क्षण क्षण में नींद का वेग टूट जाता और भूपति आश्चर्य सोचने लगता, अबतक चारू

क्यों नहीं आयी ? अन्त में न रह सकने पर भूपति ने चारू को बुलवाया। भूपति ने पूछा, चारू! आज तो तुमने बहुत ही देर कर दी।

चारू ने केवल संक्षेप में कहा, हाँ आज देर हो गयी।

चारू के आग्रहपूर्ण प्रश्नों के लिए भूपति प्रतीक्षा करता रहा, परन्तु चारू ने एक भी प्रश्न न पूछा। इससे भूपति का मन कुछ उदास हो चला। सोचने लगा—क्या चारू अमल को प्यार नहीं करती ? जितने दिनों तक अमल यहाँ उपस्थित रहा उतने दिनों तक, चारू उसके साथ हिल-मिलकर आमोद-प्रमोद में समय बिताती थी और ज्यों ही वह चला गया, उसके बारे में एकदम उदासीन हो गयी ! इस तरह के पर-स्पर विरोधी आचरण से भूपति के मनमें खटका पैदा हुआ—तो क्या चारू का मन गम्भीर नहीं है ? वह क्या केवल आमोद और दिल बहलाना ही जानती है, प्यार करना नहीं जानती। औरतों का इस प्रकार अनासक्त भाव तो अच्छा नहीं माना जाता !

चारू और अमल की मित्रता से भूपति को आनन्द मिलता था। इन दोनों का लड़कपन, खेलना, आपस में विचार-विनिमय करना उसके लिए मधुर कौतुक था। अमल को चारू जिस तरह प्यार और आदर करती थी उससे

चारू के कोमल हृदय का परिचय पाकर भूपति मन ही मन प्रसन्न होता था। आज वह आश्चर्य में पड़कर सोचने लगा—क्या ये सब ऊपरी व्यवहार, रिक्त हृदय के लेखमात्र थे? क्या हृदय में इन सबका कुछ आधार नहीं था? यदि चारू का हृदय ऐसा ही है तो मुझे कहाँ आश्रय मिलेगा?

धीरे-धीरे जाँच करने की नियत से भूपति ने उस प्रसंग को छेड़ दिया। पूछा—चारू तुम अच्छी तरह तो हो न, तबीयत खराब तो नहीं है?

चारू ने संक्षेप में जवाब दिया, अच्छी तरह ही हूँ।

भूपति—अमल का विवाह तो हो गया।

यह कहकर भूपति चुप हो गया। चारू ने समयोचित कोई बात कहने की विशेष चेष्टा की—पर एक बात भी मुँह से न निकली—वह शिथिलता होकर लेट गई।

भूपति स्वभावतः किसी तरफ गौर से नहीं देखता था—किन्तु अमल का वियोग, उसकी बिदाई का शोक उसके हृदय में विद्यमान था और इस कारण ही चारू की उदासीनता से उसको चोट लगी। उसकी इच्छा थी कि समवेदना से व्यथित चारु के साथ अमल सम्बन्धी बातचीत करके अपने हृदयभार को हलका कर दे।

भूपति—जिस लड़की से विवाह हुआ है वह बड़ी ही

अच्छी है। चारू क्या सो रही हो?

चारू ने कहा—नहीं।

भूपति—बेचारा अमल अकेला चला गया। जब मैंने उसे गाड़ी पर चढ़ाया, वह बालक की भाँति रोने लगा—यह देखकर मैं भी आँसू न रोक सका। डब्बे में दो साहब थे। पुरुष को रोते देखकर उन्हें बहुत ही आश्चर्य मालूम हुआ।

दीपक बुझ जाने से कमरे में अन्धकार फैला हुआ था। चारू करवट बदल कर लेट गयी, इसके बाद अचानक बिस्तर छोड़कर चली गई।

भूपति ने चकित होकर पूछा, चारू! क्या तबीयत खराब है तुम्हारी?

कोई उत्तर न पाकर वह भी उठा। पास ही के बरामदे से सिसकने की आवाज सुनकर वह तेजी से उसके पास पहुँचा। देखा कि चारू जमीन पर पड़ी हुई है और बहुत कष्ट से रुलाई के वेग को रोकने की कोशिश कर रही है।

इस प्रकार का अदम्य शोकोच्छ्वास देखकर भूपति फेर में पड़ गया। सोचा, मैंने चारू को क्या गलत ही समझा था। चारू का स्वभाव इतना दृढ़ है कि वह मुझसे भी हृदय की व्यथा प्रकट करना नहीं चाहती। जिन लोगों की प्रकृति ऐसी होती है उनका प्रेम बहुत गहरा होता है और

वेदना भी अत्यन्त अधिक होती है। चारू का प्रेम साधारण स्त्री पुरुषों की भाँति बाहर दिखाई नहीं पड़ता—यह बात उसने मन ही मन समझ लिया। भूपति ने चारू के प्रेम का उच्छ्वास कभी नहीं देखा था। उसने अच्छी तरह समझ लिया कि चारू के हृदय में प्रेम का भाव अन्दर दबा पड़ा है। भूपति स्वयं ही अपने हृदय के भावों को बाहर प्रकट करने में निपुण नहीं है। चारू की प्रकृति में हृदय वेग की आन्तरिक गम्भीरता का परिचय पाकर उसे एक तरह की तृप्ति मिली। भूपति तब चारू के पास ही बैठकर, किसी तरह की बातचीत न करके धीरे धीरे उसके शरीर पर हाथ फेरने लगा।

१४

भूपति जब अपने अखबार से अवसर ग्रहण कर चुका, तब उसने अपने भविष्य जीवन का एक काल्पनिक चित्र मन-ही-मन खींच लिया था—निश्चय कर लिया था कि अब मैं किसी तरह की दुराशा या दुश्चेष्टा की तरफ न जाऊँगा। चारू को लेकर लिखना पढ़ना, प्रेम, पारस्परिक दिल-बहलाव आदि से, छोटे से गार्हस्थ्य-जीवन का कर्तव्य-पालन करूँगा।

उसने सोच लिया था कि घरेलू सुख सबसे सुलभ और सुन्दर है, बराबर हिलाने डुलाने योग्य होते हुए भी पवित्र और निर्मल है। उन सहज लब्ध सुखों के द्वारा अपने जीवन-गृह के कोने में सन्ध्या का प्रदीप जलाकर निभृत शान्ति की स्थापना करूँगा। हँसी मजाक, परिहास, परस्पर के मनोरंजन के लिए प्रति दिन छोटी मोटी तैयारी में अधिक प्रयत्न की जरूरत नहीं पड़ती, और अत्यधिक सुख की प्राप्ति होती है।

कार्यरूप में परिणत करते समय उसे दिखाई पड़ा कि सुख-प्राप्ति सहज नहीं है। यह मूल्य देकर खरीदा नहीं

जाता। यदि वह अपने आप मिलता है तो उसे किसी तरह ढूँढ़ लाने का उपाय भी नहीं।

इस प्रकार किसी युक्ति से भी भूपति चारु के साथ अच्छी तरह अपना ठीक इन्तजाम न सका। इससे उसने अपने को ही अपराधी मान लिया। सोचा—बारह वर्ष तक केवल अखबार में लिख लिखकर समय बिताया, स्त्री के साथ बातचीत किस तरीके से की जाती है, इस विद्या को मैंने एकदम खो दिया है।

सन्ध्या का प्रदीप जलते ही भूपति बड़े ही उत्साह से घर जाता—जाकर दो चार बातें करता, चारु भी कुछ बातचीत करती, फिर बातचीत का सिलसिला टूट जाता। फिर किस विषय पर कौन सी बात कही जाय, इसका निश्चय वह बहुत सोचने पर भी नहीं कर पाता था। अपनी इस असमर्थता से वह स्वयं अपनी स्त्री के सम्मुख लज्जा का अनुभव करता था। स्त्री के साथ बैठकर बातचीत करना कोई कठिन काम नहीं, यही उसका खयाल था। परन्तु उसने अब देख लिया कि प्रेम-शून्य व्यक्ति के लिए यह काम बहुत ही कठिन है! सभामण्डप में भाषण करना इसकी अपेक्षा सहज काम है।

जिस सन्ध्याकालीन समय को भूपति ने हास्य, कौतुक,

आदर और प्रणय के संयोग से रमणीक समझ लिया था, उस संध्या समय को बिताना उसके लिए एक समस्या हो उठी। कुछ देरतक मौनावलम्बन के बाद भूपति सोचने लगता—यहाँ से चला जाना ही ठीक है, किन्तु चला जाऊँगा तो चारु क्या सोचेगी? यह सोचकर उठ भी नहीं सकता। कहता—चारु, ताश खेलोगी?—कोई दूसरा उपाय न देख-कर चारु कहती, अच्छा! यह कहकर एकदम अनिच्छा के साथ ताश लेकर बैठ जाती, परन्तु खेलने में बहुत अधिक गलतियाँ करके अनायास ही हार जाती—उस खेल में किसी तरह का सुख नहीं मिलता।

बहुत सोच चुकने पर एक दिन भूपति ने चारु से पूछा—चारु मन्दा को बुला लिया जाय तो कैसा हो? तुम एकदम अकेली पड़ गयी हो।

मन्दा का नाम सुनते ही चारु जल उठी। कहा—नहीं, मन्दा की मुझे कोई जरूरत नहीं है।

भूपति हँस उठा। मन ही मन खुश हुआ। सोचने लगा—साध्वी स्त्रियाँ जहाँ सती धर्म में कुछ भी व्यतिक्रम देखती हैं, वहाँ उनका धीरज टूट जाता है!

विद्वेष के प्रथम धक्के को सँभालकर चारु ने सोचा—मन्दा यहाँ रहती तो शायद पतिदेव को आमोद-प्रमोद में

रखती। पति मुझसे जिस मानसिक सुख को पाने की इच्छा करते हैं, उस सुख को मैं किसी तरह भी नहीं दे रही हूँ—इस स्थिति को समझकर चारु बहुत ही कष्ट पा रही थी। पति देवता सारी दुनिया की और सब बातें छोड़कर एकमात्र मुझसे ही अपने जीवन के सभी आनन्द खींच लेने की चेष्टा कर रहे हैं, इस एकाग्र चेष्टा को देखकर और अपने हृदय की दीनता समझकर चारु डर गयी। उसके मन में विचार आया कि इस तरह कितने दिन कटेंगे? वे और कोई दूसरा उपाय क्यों नहीं करते? दूसरा अखबार क्यों नहीं निकालते?

भूपति का मन बहलाने का अभ्यास अबतक कभी चारु को नहीं करना पड़ा था, दूसरी ओर भूपति ने चारु से किसी तरह की सेवा की माँग नहीं की थी, किसी सुख की प्रार्थना नहीं की थी। उसने चारु को पूरे तौर से अपनी जरूरतों के अनुकूल नहीं बनाया था, पर आज हठात् जब उसने अपने जीवन के सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की अप्रकट-इच्छा चारु के सामने रखदी, ऐसी हालत में मानों चारु चक्कर में पड़ गयी, ऐसा लगा मानो कहीं भी उसे खोजने पर कोई चीज नहीं मिल रही है। भूपति क्या चाहता है, किन बातों से वह तृप्त होगा इस बात को चारु

ठीक तौर से नहीं जानती और जानने पर भी उसका समाधान करना उसके लिये सहज नहीं था।

यदि भूपति धीरे धीरे बढ़ने की कोशिश करता तो सम्भवतः चारू को इतनी दिक्कतें न मालूम होतीं, किन्तु अचानक एक ही रात में दिवालिया होकर खाली भिक्षापात्र पसार देने से मानो वह घबड़ा उठी।

चारू ने कहा—अच्छा, मन्दा को बुला लो। वह रहेंगी तो तुम्हारी देखभाल में विशेष सुविधा हो सकेगी।

भूपति ने हँसकर कहा—मेरी देखभाल की कोई जरूरत नहीं है।

भूपति ने उदास होकर सोचा—मैं बहुत ही नीरस आदमी हूँ, किसी हालत में भी चारू को सुखी नहीं कर सकता।

इन बातों को सोचकर भूपति ने साहित्य में दिल लगाया। जब कभी यार दोस्त घर पर मिलने जुलने आते तो आश्चर्य में पड़कर देखते कि भूपति टैनीसन, बायरन, बंकिम बाबू के उपन्यास आदि लेकर व्यस्त है। भूपति का यह असामयिक काव्यानुराग, देखकर यार दोस्त बहुत ही हँसी मजाक और परिहास करने लगे। भूपति ने हँसकर कहा—भाई, बाँस की झाड़ी में फूल भी लगते हैं परन्तु कब

लगते हैं, इसका कोई ठिकाना नहीं रहता।

एक दिन शाम को शयन कक्ष में बड़ी बत्ती जलाकर शुरू शुरू में लज्जा से कुछ इधर उधर करते हुए भूपति ने थोड़ी देर बाद कहा—कुछ पढ़कर सुनाऊँ ?

चारू ने कहा—सुनाओ न ?

भूपति—क्या सुनाऊँ ?

चारू—जो तुम्हारी इच्छा।

भूपति चारू का कुछ भी अधिक आग्रह न देखकर थोड़ी देर के लिए रुक गया। फिर साहस करके बोला—टैनीसन की कविता का कुछ अंश अनुवाद करके तुमको सुना दूँ।

चारू ने कहा—सुनाओ।

सब मिट्टी में मिल गया। संकोच और उत्साह की कमी से भूपति पढ़ते समय रुक जाने लगा, उपयुक्त शब्दों से अंग्रेजी का भाव न व्यक्त कर सका। चारू की शून्य दृष्टि देखकर समझ गया कि उसका मन नहीं लग रहा है। प्रदीप के प्रकाश से प्रकाशित छोटा सा कमरा, सन्ध्या समय का वह निभृत अवकाश, इच्छानुसार आनन्द और उत्साह से नहीं बीता।

दो एक बार और भी इस तरह की कोशिश और

गलती करके भूपति ने अन्त में स्त्री के साथ साहित्य-चर्चा करना छोड़ दिया ।

१५

बहुत ज्यादा चोट लगने से जिस तरह नसें अशक्त हो जाती हैं और आरम्भ में दर्द मालूम नहीं होता, उसी तरह वियोग के आरम्भ में अमल के अभाव को मानों चारू भली-भाँति न समझ सकी ।

अन्त में ज्यों-ज्यों दिन बीतने लगा, त्यों-त्यों अमल के अभाव में सांसारिक शून्यता का परिणाम भी क्रमशः बढ़ने लगा । इस भयङ्कर आविष्कार से चारू हतबुद्धि-सी हो गयी । निकुञ्ज वन से बाहर निकल कर वह अचानक उस मरुभूमि के बीच आ गयी है—जिसमें दिन पर दिन चले जा रहे हैं, पर मरुभूमि की सीमा बराबर बढ़ती ही चली जा रही है । इस मरुभूमि की बात वह पहले बिलकुल ही नहीं जानती थी ।

नींद टूटने पर अचानक उसके छाती में धड़कन पैदा हो जाती । उसे एकाएक स्मरण होता—अमल तो नहीं है । सबेरे जब बरामदे में पान लगाने बैठती तो उसे यही याद

पड़ जाता कि अमल कहीं पीछे से न आता हो। कभी कभी अनमनी होकर अधिक पान लगा देती। फिर हठात उसे याद पड़ता—इतना पान क्या होगा—खाने वाला तो है नहीं। ज्योंही भण्डार घर में पहुँचती, मन में तुरन्त ही यह खयाल पैदा होता कि अमल को जलपान नहीं करना है। मन में धैर्य न रहने के कारण अन्तःपुर के आखीरी छोर पर जाते ही मानो याद आ जाता कि अमल कालेज से न आवेगा। कोई नई पुस्तक, नये लेख, नई कविता, नई समालोचना, नये कौतुक के लिए किसी की प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं है। किसी के लिये कोई चीज सिलाई करने, कोई लेख लिखने या कोई शौकीन चीज खरीदकर रखने की जरूरत नहीं है।

अपने असहनीय कष्ट और मन की चंचलता से चारु स्वयं ही आश्चर्य में पड़ गयी। मानसिक पीड़ा के अनवरत कष्टों से उसके मन में भय पैदा हुआ। मन ही मन वह केवल यही प्रश्न करने लगी—क्यों? इतना कष्ट क्यों हो रहा है? अमल मेरा कौन लगता है कि उसके लिए इतना कष्ट भोगूँ! मुझे क्या हो गया है? इतने दिनों के बाद यह कौन-सी बला मेरे सिर पर आ गयी! नौकर चाकर, रास्ते के मजदूर तो निश्चिन्त होकर घूम रहे हैं,

मेरी हालत ऐसी क्यों हो गयी ? हा भगवान् मुझे ऐसी विपत्ति में क्यों गिरा दिया ?

मन ही मन बराबर केवल इसी तरह का प्रश्न करती रहती। उसे आश्चर्य भी मालूम होता, परन्तु दुःख का कुछ भी मूल कारण न मालूम होता। अमल की स्मृति में उसका मन अकारण इतना भर उठा है कि कहीं भी भागकर चले जाने की जगह तक उसे नहीं दिखलायी देती।

अमल की स्मृति के आक्रमण से भूपति उसकी क्या रक्षा करता ?—वह तो स्वयं विरह-पीड़ित था, अमल की बातों को याद कर।

अन्त में चारू एकदम चिन्ता-मुक्त होने का निश्चय कर, मनस्तापों से युद्ध कर शान्त और गम्भीर हो गयी। अमल की स्मृति को बहुत ही यत्न के साथ उसने अपने हृदय-मन्दिर में स्थापित कर लिया।

धीरे धीरे वह ऐसी स्थिति पर पहुँच गयी कि एकाग्रचित्त से अमल का ध्यान करना उसके लिए दैनिक कार्य हो गया—मानों वही स्मृति उसके जीवन के श्रेष्ठ गौरव की सामग्री बन गयी हो।

घरेलू कामों से अवकाश मिलने पर उसने एक समय नियत कर लिया। उस समय अकेली कमरे का किवाड़ बन्द

करके एक एक कर बहुत बारीकी से वह अमल के साथ हुई अपने जीवन की प्रत्येक घटना को याद करती। बिस्तर पर लेटकर बार-बार पुकारती, अमल, अमल ! समुद्र पार से मानों आवाज आती, भाभी, क्या कहती हो भाभी, क्या ? चारू भींगी हुई आँखें बन्द कर कहती—अमल, तुम नाराज होकर क्यों चले गये ? मैंने तो कुछ भी अपराध नहीं किया। तुम यदि अच्छी तरह प्रसन्नता के साथ बिदाई लेकर जाते तो मुझे इतना दुःख न होता। अमल के सामने रहने पर जिस तरह बातचीत होती थी, ठीक उसी तरह चारू शब्दों का उच्चारण करके बातचीत करती। अमल ! मैं तुम्हें एक दिन के लिए भी नहीं भूली। एक दिन के लिए भी नहीं ! मेरे जीवन के सभी श्रेष्ठ पदार्थ को तुमने ही फूलने फलने का मौका दिया है। अपने जीवन के सार भाग से मैं प्रति दिन तुम्हारी पूजा करूँगी।

इस प्रकार चारू ने अपने सभी गृहस्थी के कामों और अपने सब कर्तव्यों के नीचे की तह में, सुरंग खोदकर उस प्रकाशहीन निस्तब्ध अन्धकार के बीच, अश्रुमालाओं से सुगन्धित एक गुप्त शोक-मन्दिर निर्माण करके रख दिया। यहाँ उसके पति या दुनियाँ के और किसी आदमी का कुछ भी अधिकार नहीं रहा। वह स्थान जितना ही गुप्त है,

गम्भीर भी उतना ही है, उतना प्रिय भी है। उसी के दरवाजे पर वह संसार के सभी बाह्य-स्वरूप का त्याग कर अपने अनावृत आत्मस्वरूप में प्रवेश करती है, और वहाँ से निकल कर अपने मुँह पर आवरण डालकर दुनियाँ के हास्यालाप और क्रियाकर्म की रंगभूमि के बीच आकर उपस्थित हो जाती है।

१६

इस तरह अपने मन के साथ द्वन्द्व करना छोड़कर, चारू ने अपने वृहत् विषाद के बीच से एक प्रकार की शान्ति को अपना लिया और एकाग्रभाव से पति-भक्ति और पति-सेवा में निमग्न हो गयी। भूपति जब नींद में विभोर रहता तब चारू धीरे-धीरे उसके पैरों के नीचे माथा रखकर पैरों की धूलि अपने ललाट पर चढ़ा लेती। सेवा सुश्रुषा में या घर के अन्य कार्यों में वह पति की छोटी सी छोटी इच्छा को भी असम्पूर्ण नहीं रखती थी। आश्रित और प्रतिपालित व्यक्तियों के प्रति किसी तरह की लापरवाही से यदि भूपति के मन में दुःख पैदा होने की बात उसे मालूम हो

जाती तो उन लोगों के प्रति उचित रीति से आतिथ्य दिखलाने में वह तिलमात्र भी त्रुटि न होने देती। इस प्रकार सभी कामकाज पूरा करके भूपति का उच्छिष्ट प्रसाद खाकर चारू का दिन शान्तिपूर्वक बीत जाता।

इस सेवा और यत्न की बदौलत भूपति के टूटे हुए स्वास्थ्य और बिगड़े हुए शारीरिक-सौन्दर्य में बहुत अधिक सुधार हो गया। मानों उसे नवयौवन की प्राप्ति हो गयी हो और साथ ही ऐसा मालूम हुआ मानों पहले उसका विवाह ही नहीं हुआ था, इतने दिनों के बाद हुआ है। हास्य-परिहास और साज-सजावट आदि से विकसित होकर भूपति ने अपने मन को सारी दुर्भावनाओं को मन के एक कोने में ठेलकर रख दिया। बीमारी से उठने पर जिस प्रकार भूख की ज्वाला बढ़ जाती है, शरीर में योगशक्ति के विकास को जिस प्रकार सचेत भाव से अनुभव किया जाता है, इतने दिनों के बाद भूपति के मन में ठीक उसी तरह का एक अपूर्व और प्रबल भावावेश का सञ्चार हो गया। मित्रों से—यहाँ तक कि चारू से छिपाकर भूपति केवल गुप्त रूप से कविता पढ़ने लगा। उसने मन ही मन कहा—अखबार बन्द हो जाने पर, बहुत कष्ट सह चुकने पर, इतने दिनों के बाद मैं अपनी स्त्री का आविष्कार कर सका हूँ।

एक दिन भूपति ने चारू से प्रेम भरे शब्दों में कहा—चारू ! तुमने आजकल लिखना पढ़ना एकदम क्यों छोड़ दिया है ?

चारू ने कहा—मैं बहुत बड़ी लेखिका हो गयी हूँ न !

भूपति—सच्ची बात कहता हूँ । आजकल के लेखकों में मैंने तुम्हारी शैली की तरह अच्छी शैली किसी की भी नहीं देखी । 'विश्वबन्धु' पत्र ने अपना जो मन्तव्य दिया था, मेरा भी ठीक वही मत है ।

चारू—अः ! रुको तो सही ।

भूपति—"यह देख ही लो न" कहकर भूपति सरोरुह की एक प्रति निकालकर, चारू और अमल की लेखनशैली से तुलना करने लगा । चारू का चेहरा लाल हो उठा और उसने झट-पट भूपति के हाथ से पत्र को छीनकर अपने अञ्चल के बीच ढँक लिया ।

भूपति मन में सोचने लगा—लिखने के काम में एक साथी की जरूरत पड़ती है । साथी के बिना मन की भावनाएँ नहीं निकलतीं । मैं समझ गया । अब उपाय यही है कि मैं भी लिखने की आदत बढ़ाऊँ । अभ्यास बढ़ा लेने पर धीरे धीरे चारू का भी लिखने में उत्साह बढ़ जायगा ।

भूपति गुप्तरूप से खाता लेकर बैठ जाता और लिखने का अभ्यास करने लगा !—कोष देखकर, बार बार काट-

कर—फिर लिख लिखकर, भूपति बेकारी का समय व्यतीत करने लगा। इतने कष्ट और अपार मेहनत से लिखी गयी उन रचनाओं के प्रति उसके मन में धीरे धीरे विश्वास और ममता की भावना जाग उठी।

अन्त में एक दिन भूपति ने एक उपाय सोचा। अपने लेख को दूसरे से नकल कराकर उसने अपने स्त्री को पढ़ने के लिये दिया। कहा—मेरे एक मित्र ने अभी लिखना शुरू किया है। मैं तो कुछ भी नहीं समझता कि इसमें क्या बातें लिखी हुई हैं, पर तुम्हारे पास लाने का मतलब यह है कि तुम इसे एक बार पढ़कर देखो कि यह चीज कैसी हुई है?

खाता झटपट चारू के हाथ में रखकर भूपति तुरन्त कमरे से बाहर चला गया। सरल भूपति का यह कपटपूर्ण व्यवहार समझने में चारू को देर न लगी।

चारू उसे आदि से अन्त तक ध्यानपूर्वक पढ़ गयी। लेख का विषय और उसकी शैली देखकर वह हँस पड़ी। उसके मन में गम्भीर विचार उठने लगे। सोचा—पतिभक्ति में इस तरह तत्पर हूँ, भक्ति प्रदर्शित करने के लिये बराबर कोशिश करती रहती हूँ, फिर भी पति की यह कार्यप्रणाली किस मतलब से है?

'हाय! चारू अपनी पति-भक्ति की इतनी तैयारी कर रही है! और वह क्यों लड़कपन करके पूजा के अर्घ्य को इधर-उधर बिखेर रहा है। चारू से प्रशंसित होने या वाह-वाही लूटने की उसकी ऐसी चेष्टा क्यों है? यदि वह कुछ भी न करता और चारू का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील न बना रहता, तो भी पति-पूजा में चारू को वह अन्यमनस्क न देखता। चारू हृदय से यही चाहती है कि भूपति किसी हालत में भी अपने को उससे छोटा या कम न समझे।

चारू ने खाते को मोड़कर रख दिया। तकिये पर टेक कर सुदूर निगाह दौड़ाकर, वह बहुत देर तक सोचती रही—अमल भी तो कभी कभी नये लेख लाकर उसे पढ़ने के लिये देता था?

सन्ध्या समय शयन कक्ष के सामने वाले बरामदे में फूलों के निरीक्षण करने में व्यस्त उत्सुक भूपति को, चारू से कुछ पूछने का साहस नहीं हुआ।

चारू ने मौन रहना अनुचित समझकर गम्भीर भाव से पूछा—"क्यों जी, क्या तुम्हारे मित्र का यह पहला निबन्ध है?"

भूपति ने कहा—हाँ।

चारु—यह तो बहुत अच्छा हुआ है। देखने से ऐसा मालूम नहीं होता कि पहला लेख है।

भूपति प्रसन्न होकर सोचने लगा—मैंने लेख तो मित्र का कहकर चारु को दिया था, अब उसे अपने नाम से कैसे प्रकाशित किया जा सकता है?

भूपति का उत्साह बढ़ गया। वह बराबर लिखने लगा। बहुत तेज़ी से खाता के बाद खाता लिखने में व्यस्त रहने लगा। और फिर नाम प्रकाशित होने में भी देर न लगी।

१७

चारु इस बात का बराबर पता लगाती रहती कि विलायत से चिट्ठी आने का दिन कब है। पहले पहल अदन से भूपति के नाम एक पत्र आया। उस पत्र में अमल ने भाभी को प्रणाम निवेदन किया था। फिर स्वेज नहर से भूपति को अमल का दूसरा पत्र मिला। उसमें भी भाभी को प्रणाम लिखा हुआ था। फिर तीसरी चिट्ठी माल्टा से रवाना की गयी थी और उसमें भी अन्त में पुनश्च—लिखकर अमल ने भाभी को प्रणाम की सूचना दी थी।

चारू के पास अमल की एक भी चिट्ठी नहीं आयी। भूपति के पास जो चिट्ठियाँ आयी थीं, उन्हें माँगकर चारू ने बहुत गौर से इधर उधर उलटकर देखा, परन्तु आदि से अन्त तक पढ़ जाने पर 'प्रणाम' के अतिरिक्त उसके बारे में कहीं पर एक अक्षर भी नहीं दिखाई पड़ा। उसके सम्बन्ध में किसी तरह का जिक्र कहीं भी नहीं मिला।

इधर कुछ दिनों से चारू ने अपने मन को संयत बनाकर शान्त बना लिया था और शान्त विषाद की निर्मल चन्द्रातप छाया में आश्रय ले चुकी थी। परन्तु पत्रों को पढ़कर और अपने प्रति अमल की ऐसी उपेक्षा का भाव देखकर उसका शान्त मनोभाव फिर बदल गया और सब बन्धन छिन्न हो गया। हृदय में पुनः धड़कन शुरू हुई, हृत-पिण्ड मानो टूटने लगा। गार्हस्थ्य-जीवन की कर्तव्य-स्थिति के बीच फिर भूकम्प के धक्के लगने लगे।

एक दिन की विचित्र घटना देखकर भूपति चकित हो गया। आधीरात बीत चुकी थी। अचानक नींद टूट जाने पर भूपति ने देखा कि चारू पलङ्ग पर नहीं है। वह उठकर खड़ा हो गया और इधर उधर खोजने लगा। आँगन में आकर देखा कि चारू दक्षिण तरफ के कमरे में खिड़की के पास चुपचाप बैठी हुई है। भूपति को देखकर चारू झटपट

उठकर खड़ी हो गयी। कहा—उस कमरे में बेहद गर्मी मालूम हो रही है, इसलिए थोड़ी देर के लिए यहाँ आ गयी। यहाँ अच्छी हवा लग रही है।

पत्नीको आराम से रखने के लिए भूपति बराबर प्रयत्नशील रहता था। उद्विग्न होकर उसने शयनकक्ष में पलङ्ग पर पङ्खा खिंचवाने का बन्दोबस्त कर दिया और इस बात का ख्याल रखने लगा कि कहीं ऐसी त्रुटि न हो, जिससे उसका स्वास्थ्य बिगड़ जाय। भूपति की ऐसी तत्परता देखकर चारू मुसकुराकर कहती—मैं बहुत अच्छी तरह हूँ, तुम झूठमूठ क्यों घबड़ाते रहते हो। इस मुसकुराहट और हँसी को प्रस्फुटित करने में उसे अपनी छाती को कड़ी करके पूरी शक्ति लगा देने की जरूरत पड़ती थी।

अमल यथासमय बिलायत पहुँच गया। चारू के मन में पहले यह विचार आया था कि रास्ते में शायद उसे स्वतन्त्र रूप से पत्र लिखने का मौका नहीं मिला। नियत स्थान पर पहुँच चुकने पर शायद विस्तृत पत्र लिखकर भेजेगा। किन्तु वह विस्तृत-पत्र नहीं आया। प्रतीक्षा विफल हुई।

प्रत्येक 'मेल' आनेके दिन चारू अपने सभी कामों और घरेलू धन्धों को करती हुई भीतर ही भीतर मन में

छटपटाती रहती थी। कहीं भूपति यह न कह दे कि तुम्हारे नाम का कोई पत्र नहीं है, इस शंका से चारू उससे इसका जिक्र ही नहीं करती थी।

ऐसे ही समय में एक दिन डाक आने के दिन भूपति मुसकुराता हुआ धीरे धीरे आकर बोला—एक चीज है, देखोगी?

चारू व्यस्त थी, पर सुनकर चकितभाव से उसने पूछा—कहाँ है दिखाओ?

भूपति ने थोड़ा परिहास करने के विचार से नहीं दिखलाया। चारू अधीर हो उठी। उसने उठकर भूपति की चादर के बीच से वांछित वस्तु को छीन लेने की कोशिश की। उसने मन ही मन सोचा, सबेरे से ही मेरे मन में यह विचार बार-बार आ रहा है कि आज जरूर ही मेरी चिट्ठी आवेगी—यह कभी व्यर्थ नहीं हो सकता।

चारू की ऐसी उत्सुकता से भूपति की परिहास-स्पृहा लगातार बढ़ती गयी—वह चारु से बचता हुआ पलंग के चारों तरफ घूमने लगा।

तब अत्यन्त ऊबकर चारु पलंग पर बैठ गयी। उसकी आँखें आँसू से भर उठीं।

चारू के अत्यन्त आग्रह से भूपति ने चादर के अन्दर

से बहुत उत्सुकता के साथ एक खाता निकाला, जिसमें उसके रचित निबन्ध भरे पड़े थे।

चारु की गोद में खाता रखकर उसने कहा—रंज मत हो, यह लो!

१८

यद्यपि अमल ने भूपति को पहले ही बतला दिया था कि पढ़ाई के झमेले में रहने से बहुत दिनों तक उसे पत्र लिखने का समय न मिलेगा, तथापि दो एक डाक, उसके पत्र बिना खाली जाते ही चारु को संसार कण्टकाकीर्ण सा प्रतीत होने लगा।

सन्ध्या समय कुछ बातचीत के सिलसिले में चारु ने अत्यन्त उदासीनता के साथ शान्त स्वर में अपने पति से कहा—अच्छा देखो, क्या विलायत एक तार भेजकर यह दरियाफ्त करना उचित न होगा कि इन दिनों अमल किस हालत में है?

भूपति ने कहा—दो सप्ताह पूर्व एक पत्र आया था जिसमें उसने लिखा था कि इन दिनों अब मैं पढ़ने में अत्यन्त व्यस्त हूँ।

चारु ओः ! तब तो कोई जरूरत नहीं है। मैं सोच रही थी, विदेश में पड़ा हुआ है, कहीं बीमार न हो गया हो, क्या ठिकाना है ?

भूपति—नहीं, यदि ऐसी कोई बात होती तो जरूर खबर मिलती। इसके अलावा तार भेजने में भी तो कम खर्च नहीं है।

चारु—क्या ऐसी बात है ? मैं समझती थी कि तार भेजने में दो एक रुपये से अधिक खर्च न लगेगा।

भूपति—क्या कहती हो, प्रायः एक सौ रुपये का धक्का है।

चारु—तब तो बात ही दूसरी है।

दो एक दिन बीत जाने पर चारु ने भूपति से कहा—मेरी बहिन इन दिनों चुंचुड़ा में है। क्या तुम आज वहाँ जाकर एक बार उसका समाचार ला सकते हो ?

भूपति—क्यों ? क्या उनको कोई रोग हो गया है ?

चारु—नहीं, कोई रोग नहीं। तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारे जाने से वे लोग कितना प्रसन्न होते हैं !

चारु के अनुरोध से भूपति एक बग्गी पर सवार होकर हवड़ा स्टेशन की तरफ रवाना हुआ। रास्ते में बैलगाड़ियों का एक तांता आ पहुँचा और उसकी बग्गी रुक गयी।

ऐसे ही समय में परिचित तार पहुँचाने वाले प्यून से मुलाकात हो गयी। भूपति को देखकर उसने झटपट उसके हाथ में एक तार रख दिया। इङ्गलैण्ड का तार देखते ही भूपति बहुत डर गया। सोचा, शायद अमल बीमार पड़ गया है। उतरते उतरते उसने लिफाफा खोलकर पढ़ा—मैं अच्छी तरह हूँ।

इसका क्या मतलब है? जाँच करने पर मालूम हुआ कि वह तो प्री-पेड टेलीग्राम का जबाब है।

हवड़ा जाना रुक गया। बग्गी को लौटाने का हुक्म देकर भूपति घर पहुँचा और स्त्री के हाथ पर टेलीग्राम रख दिया। भूपति के हाथ में टेलीग्राम देखते ही चारू का मुँह फीका और पीला पड़ गया।

भूपति ने पत्नी से कहा—मैं इसका कुछ भी मतलब नहीं समझ रहा हूँ। चारू ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। खोज करने पर भूपति इसका अर्थ समझ गया। चारू ने अपना गहना बन्धक रखकर कर्ज में रुपये लिये और उसी से टेलीग्राम भेजा था।

भूपति सोचने लगा—इतनी परेशानी की जरूरत ही क्या थी? मुझसे कुछ और जोर देकर अनुरोध करने से ही तो मैं तार भेज देता। नौकर को बाजार में भेजकर

गुप्तरूप से गहना बन्धक रखना और कर्ज लेकर तार भेजना यह तो कभी अच्छा काम नहीं कहा जा सकता।

चारू की इस गुप्त कार्यवाही से भूपति का मन खिन्न हो गया। रह रहकर बार बार यही प्रश्न आने लगा कि चारु ने ऐसा अपराध क्यों किया? एक तरह का अस्पष्ट सन्देह अलक्ष्य-रूप से उसके हृदय को बेधने लगा। उस सन्देह को प्रत्यक्षरूप से देखने की उसकी बिल्कुल ही इच्छा नहीं थी, इसलिये उसने इसे भूल जाने की कोशिश की, किन्तु किसी उपाय से भी उसके मन से व्यथा दूर नहीं हुई।

१९

अमल पूर्णरूप से स्वस्थ है, फिर भी वह पत्र नहीं लिखता। एकदम ही ऐसा कठोर कैसे बन गया? और ऐसा कष्टदायक बिछोह कैसे हो गया? सामने जाकर इस प्रश्न का उत्तर माँगने की इच्छा होती है, किन्तु यह तो सम्भव नहीं है। बीच में इतना बड़ा समुद्र पड़ा हुआ है। उसे पार करने का कोई रास्ता नहीं है। निष्ठुर विच्छेद, निरुपाय

विच्छेद, सभी प्रश्नों और सभी प्रतिकारों का अतीत विच्छेद !

चारु की अवस्था दयनीय हो चली। वह अपने को खड़ी रखने में असमर्थ हो गयी। घर के काम ज्यों के त्यों पड़े रह जाते हैं, उनको पूरा करने में तबीयत नहीं लगती, सब बातों में गलतियाँ होती हैं, कोई काम सुसम्पन्न नहीं होता। नौकर-चाकर, दास-दासियाँ मनमाने तौर से चोरी करते रहते हैं। उसकी दयनीय दशा को देखकर लोग तरह तरह की काना-फूसी करने लगे, पर इन सभी बातों को जानते हुए भी उसे होश नहीं होता।

हठात् जब तब चारु चौंककर उठ जाती, स्वयं बातचीत करती और रोने लग जाती। अमल का नाम सुनते उसका मुँह फीका हो जाता।

अन्त में भूपति ने भी सब कुछ देख लिया और क्षणभर के लिए भी जो विचार उसके मस्तिष्क में कभी नहीं आया था उसे भी लाना पड़ा। उसके लिए संसार एकदम वृद्ध, शुष्क और जीर्ण हो गया।

बीच कुछ दिनों तक आनन्द के उन्मेष में भूपति अन्धा हो गया था। अब वह कुछ दिनों की स्मृति, उसको लज्जित करने लगी। जो अनभिज्ञ बनकर जौहर नहीं

पहचानता, उसे क्या नकली पत्थर दिखाकर इस तरह वञ्चित किया जा सकता है ?

एक एक करके चारु के सभी आचरण, बनावटी प्यार आदि भूपति को याद पड़ने लगे। चारु के जिस बर्ताव से, जिन बातों से या आदर प्यार से भूपति भूलकर फूल उठा था, वे सभी एक एक करके स्मृतिपट में पहुँचकर 'मूढ़, मूढ़, मूढ़' कहकर उसे बेंत मारने लगे।

अन्त में बहुत कष्ट, बहुत परिश्रम और यत्न के साथ लिखी अपनी रचनाओं की बात उसे याद पड़ी। भूपति के अन्तर्हृदय में यह भाव एकाएक जाग उठा कि धरणी दो खण्डों में विदीर्ण हो जाय तो अच्छा हो। अंकुश से भगाये जानेवाले की तरह तेजी से पद संचालन करता हुआ भूपति चारू के पास पहुँचकर पूछा—मेरे लिखे हुए वे सब लेख कहाँ हैं ?

चारू ने कहा—मेरे पास ही तो हैं !

भूपति ने कहा—उन सबको लाकर दे दो !

चारू उस समय भूपति के लिये कचौड़ी पका रही थी, कड़ाही गर्म थी। कहा—क्या तुम्हें अभी जरूरत है ?

भूपति ने कहा—हाँ, अभी तुरन्त चाहिये। चारू ने कड़ाही चूल्हे से उतार कर रख दी और आलमारी से खाता तथा सब कागजात ले आयी।

भूपति का धैर्य टूट चुका था। उसने झटपट चारू के हाथ से सब छीनकर चूल्हे के अन्दर फेंक दिया।

चारू घबड़ा उठी और उनको बाहर निकालने की कोशिश करते हुए उसने कहा—यह तुमने क्या किया?

भूपति ने उसका हाथ पकड़ कर दबा रखा और गरजता हुआ बोला—बस करो, निकालने की जरूरत नहीं है।

चारू आश्चर्य में पड़कर खड़ी रह गयी। क्षणभर में सभी लेख आग में जलकर खाक हो गये।

चारू सब कुछ समझ गयी। लम्बी साँस खींचकर चुप रही। कचौड़ी पकाने का काम अधूरा छोड़कर उस स्थान से हट गयी।

भूपति की इच्छा नहीं थी कि खाता चारू के सामने ही नष्ट कर दिया जाय। किन्तु ठीक सामने ही आग जल रही थी, देखकर न मालूम किस तरह खून उसकी नसों में उमड़ पड़ा। भूपति अपने को रोक न सका। वञ्चना करने वाली के सामने ही प्रवञ्चित-बेवकूफ की सारी चेष्टाओं को उसने आग में फेंक दिया।

सभी राख में परिणत हो जाने पर जब भूपति की आकस्मिक उद्दण्डता शान्त हो गयी, तब अपने अपराध का

बोझ ढोती हुई जिस गम्भीर विषाद के साथ चुपचाप सिर झुकाये चारु वहाँ से चली गयी थी, वह दृश्य भूपति के मन में जाग उठा। सामने गौर से देखने पर मालूम हुआ कि जिस चीज को वह विशेष रूप से पसन्द करता है, उसे ही बहुत यत्न से वह तैयार कर रही थी।

भूपति बरामदे की रेलिंग पर टेक कर खड़ा हो गया। मन ही मन सोचने लगा—मेरे लिये, मेरे नाम पर, चारु इतनी अटूट मिहनत, इतनी कोशिश, इतनी प्रवञ्चना कर रही है, इससे दयनीय—शोचनीय बात सारी दुनियाँ में और क्या हो सकती है? ये सभी प्रवञ्चनाएँ, इस ठगिनी की घृणित छलनामात्र तो नहीं है! इन छलनाओं के लिए क्षतहृदय, क्षत यन्त्रणा चारगुनी बढ़ाकर, अभागिनी का इतने दिनों तक प्रतिक्षण अपने हृत्पिण्ड से रक्त पीस पीस कर बाहर निकालना पड़ा है। भूपति ने मन ही मन सोचा—हाय अबला, हाय दुःखिनी! कोई जरूरत नहीं थी मुझे इन सबकी, कुछ भी जरूरत नहीं थी! इतने दिनों तक मैंने प्रेम पाकर भी नहीं पाया था, प्रेम क्या है यह मैं मालूम भी न कर सका था। मैं तो अखबार लिख-लिखकर और प्रूफ देखकर ही सन्तुष्ट था, मेरा समय आनन्द से बीतता जा रहा था—मेरे लिए इतना करने की क्या जरूरत थी?

वह और भी गम्भीर भाव से सोचने लगा। तब उसने अपने जीवन को चारू के जीवन से दूर हटाकर, डाक्टर जिस तरह भयानक रोग से ग्रस्त रोगी को देखता है—ठीक उसी तरह भूपति ने, बहुत दूर से सम्बन्धहीन व्यक्ति को जिस प्रकार देखा जाता है उसी प्रकार चारू को देखा। उस क्षीणशक्ति नारी का हृदय क्या प्रबल संसार द्वारा चारो ओर से आक्रान्त है? कोई ऐसा व्यक्ति या ऐसी संगिनी नहीं है, जिससे वह अपने हृदय की सभी बातें व्यक्त कर सके। ऐसी कोई बात नहीं है जो बतलाई जाय, ऐसा कोई स्थान नहीं है, जहाँ सारा हृदय खोलकर वह हाहाकार कर सके—फिर भी वह इस अप्रकट, अनिवार्य, दिन पर दिन बढ़नेवाले दुःखभार को ढोती हुई, बहुत ही सीधे सादे व्यक्ति की तरह, अपनी सुशीला पड़ोसियों की तरह प्रतिदिन के घरेलू कामों को करती जा रही है।

भूपति अपने शयनगृह में गया। वहाँ उसने देखा कि चारू खिड़की के पास खड़ी है और लोहे को छड़ पकड़कर, अश्रु हीन अनिमेष दृष्टि से बाहर की तरफ गौर से देख रही है। धीरे धीरे भूपति उसके पास जाकर खड़ा हो गया—कुछ भी नहीं बोला, केवल उसके मस्तक पर अपना हाथ रख दिया।

२०

मित्रों ने, सम्बन्धियों ने भूपति से पूछा—बात क्या है, इतने व्यस्त क्यों हो ?

भूपति ने कहा—अखबार—

एक मित्र—फिर अखबार की चर्चा ? क्या मकान आदि सभी अखबार में लपेटकर गङ्गाजी के जल में फेंकने की इच्छा है ?

भूपति—नहीं, अब अपना अखबार न निकलेगा।

मित्र—तब ?

भूपति—मैसूर में एक अखबार निकलने जा रहा है, मुझे अधिकारियों ने सम्पादक नियुक्त किया है।

मित्र—घर द्वार छोड़कर एकदम इतनी दूर मैसूर चले जाओगे ? चारु को भी साथ ले जा रहे हो ?

भूपति—नहीं, मामा सपरिवार यहाँ आकर रहेंगे।

मित्र—देख रहा हूँ किसी तरह भी तुम्हारा सम्पादकीय नशा नहीं टूटा।

भूपति—प्रत्येक मनुष्य को एक न एक नशा जरूर रहना चाहिये।

भूपति के जाने का समय आ गया तो चारु ने पूछा—

कब आओगे ?

भूपति—यदि तुमको उदास मालूम होने लगे, अकेली रहने में अच्छा न लगे तो मेरे पास पत्र लिख भेजना, मैं आ जाऊँगा।

यह कह कर विदा होकर भूपति जब मकान के बाहर दरवाजे पर पहुँचा तब हठात् दौड़ती हुई चारु उसके पास पहुँची और हाथ पकड़कर जोरों से दबाकर बोली—मुझे भी अपने साथ ले चलो ! मुझे यहाँ छोड़कर मत जाओ।

भूपति रुककर खड़ा हो गया और चारु के मुँह की तरफ देखने लगा। चारु का हाथ शिथिल पड़ जाने से भूपति का हाथ छूट गया। भूपति चारु के पास से हटकर बरामदे में आकर खड़ा हो गया।

भूपति ने समझ लिया, अमल के वियोग से और उस वियोग की स्मृति से जो मकान घिरा हुआ है, जिसके चारों ओर उस वियोग का दावानल जल रहा है, उस मकान को छोड़कर चारु भाग जाना चाहती है। किन्तु मेरी बात और मेरी मानसिक स्थिति को इसने एक बार भी नहीं सोचा ! मैं कहाँ भागकर जाऊँ ! जो स्त्री निरन्तर अन्य पुरुष का ध्यान कर रही है, विदेश जाकर भी उसे भूल जाने का समय न पाऊँगा। और स्वजनविहीन प्रवास में प्रति दिन

उसके साथ रहना पड़ेगा। सारा दिन परिश्रम करके शाम को जब घर लौटूँगा, तब निस्तब्ध—शोकग्रस्त नारी के साथ वह सन्ध्या तथा रात्रि कितनी भयानक और शोकदायक हो उठेगी! जिसके हृदय के अन्दर अन्य पुरुष का चिन्तनभार मौजूद है, उसे अपने कलेजे के पास पकड़ रखने में मैं कितने दिनों तक समर्थ हो सकूँगा और कितने वर्षों तक मुझे इस हालत में जीवित रहना पड़ेगा! जो आश्रयहीन होकर टूट फूट गया है, उसकी टूटी फूटी ईंटों को फेंककर न जा सकूँगा, कन्धे पर रखकर कहाँ जाऊँगा? वहाँ ही क्या इन सबको भी ढोकर ले जाना पड़ेगा।

भूपति ने चारू के पास आकर कहा—नहीं, यह काम मैं न कर सकूँगा।

क्षणभर में चारू का सारा रक्त सूख गया, मुँह फीके कागज की तरह हो गया। चारू झट्टी से पलंग पकड़कर आवाक् रह गयी।

उसी समय तुरन्त ही भूपति ने फिर कहा—चलो चारू, मेरे साथ चलो!

चारू ने कहा—नहीं रहने दो, जरूरत नहीं है।

समाप्त